वर्ष 63
जनवरी, 2012

अमर ज्योति का ज्ञान दीप अपने घर आंगन में जलाइये

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक

सिकन्दर जौहर

Mob.: 9996472685

सभा कार्यालय

Tel.: 01662-225804

E-mail : editor@amarjyotipatrika.com

info@amarjyotipatrika.com

Website : www.amarjyotipatrika.com

इस पत्रिका में व्यवस्थापक के अतिरिक्त उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : ₹ 50

आजीवन सदस्यता शुल्क : ₹ 500

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें।"

क्र.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	1
2.	सबद -4	2
3.	श्रीमती रेणुका बिश्नोई ने किया.....	4
4.	नववर्ष शुभकामनाएं	5
5.	भगवान जांभो जी का आलौकिक व्यक्तित्व	6
6.	नववर्ष कामना, नये साल का अभिनन्दन, नये सुंदर साल में	10
7.	तुम्हारा स्वागत है नववर्ष, नववर्ष, नए साल की शुभकामनाएं	11
8.	संवर गई जिन्दगी (लघु कथा)	12
9.	दहशत	14
10.	नववर्ष 2012 की प्रफुल्लित किरणें तुम्हें...., विष्णु दशावतार वंदना	15
11.	बधाई संदेश	16
12.	आइए अपनी पहचान बनाएं-10	18
13.	व्यर्थ चिंतन व परचिंतन को समाप्त.....	20
14.	क्या आप ऐसा कर सकते हैं?	21
15.	निःस्वार्थ और निष्काम भाव से.....	22
16.	राठौड़ राजवंश पर गुरु जांभोजी का प्रभाव	24
17.	'पर्यावरण बचाओ' एक निवेदन	26
18.	हलचल	28
19.	शोक संदेश	32

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय...

नववर्ष में हो नव संकल्प

प्रिय पाठको,

जब तक नव वर्ष 2012 का यह प्रथम अंक आपके हस्तगत होगा तब तक वर्ष 2011 आपसे चुपके से विदा ले चुका होगा और नव वर्ष का आगाज धूमधाम से हो चुका होगा। प्राय: हर वस्तु का आगाज जितने धूमधाम से होता है उसकी विदाई उतनी ही चुपके से होती है क्योंकि बीते हुए के प्रति हमारा उपेक्षा का भाव रहता है। वस्तुत: कलैण्डर में एक वर्ष का बीतना वैसे ही है जैसे इतिहास की अंगूठी से एक ऐसे नग का झड़ जाना जो कभी फिर नहीं लग सकता, परन्तु यह झड़ा हुआ नग बहुत शिक्षा दे सकता है, यदि कोई इसकी भाषा को समझे तो। वैसे तो उदय होने वाला हर दिन नया होता है फिर भी कलैण्डर से किसी एक वर्ष का चले जाना और एक नए वर्ष का आ जाना बिल्कुल साधारण घटना नहीं है, इसलिए हमें नये वर्ष का स्वागत नये उत्साह के साथ करना चाहिए क्योंकि जिसका आगाज अच्छा होता है उसका अंजाम भी अच्छा होता है। नया वर्ष हमें ऐसे लगना चाहिए जैसे नई उमंगों, नई तरंगों, नए संकल्पों, नये ख्वाबों से भरपूर एक नई सुबह निराशा व अवसाद के अंधेरे को चीरकर हमारे जीवनरूपी आंगन में उतर रही हो। इससे हमें एक नई उर्जा व चिंतन का नया आयाम मिलता है जिससे सकारात्मकता का विकास होता है अन्यथा नये वर्ष के नाम पर केवल दीवारों के कलैण्डर ही बदलते हैं।

नये वर्ष के उत्साह में हम बीते हुए वर्ष को बिल्कुल भूल जाते हैं जो उचित नहीं है क्योंकि बीता हुआ वर्ष हमारे लिए एक पाठ की भांति होता है जो हमें भविष्य की राह दिखाता है। गत वर्ष में रही कमियों, त्रुटियों से सबक लेकर ही हमें नये वर्ष के सपने बुनने चाहिए। निश्चित रूप से ऐसे अवसर हमारे लिए चिंतन के नये द्वार खोलते हैं और यह समय होता है- नव संकल्प लेने का। इस नये वर्ष का स्वागत भी हमें नव संकल्प लेकर करना चाहिए। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उन सब बुराइयों व आदतों का त्याग व उन्मूलन करेंगे जिनसे स्वस्थ समाज व मानवता के पथ में बाधा उत्पन्न होती है। हमारा यह संकल्प होना चाहिए कि हम गुरु जम्भेश्वर भगवान सदृश महापुरुषों के द्वारा दिखाए गये पथ पर पूरी सुदृढ़ता से चलेंगे। ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे दूसरों के हृदय पर चोट पहुंचे और मानवता कलंकित हो।

आज वर्तमान के इस माहौल का अवलोकन करें तो हमें ज्ञात होता है कि हम अपना अधिकांश समय व ऊर्जा व्यर्थ के वाद-विवादों, मतभेदों व झगड़ों में बर्बाद करते हैं। नव वर्ष में हम संकल्प लें कि अब हम इन सबसे दूर हटकर हमारी प्रतिभा व क्षमता का उपयोग सामाजिक जागरूकता, ज्ञान विस्तार और पर दु:ख हरने में करेंगे। ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, चुगली, नशे आदि को पूर्णतया त्यागकर आपसी प्रेम, भाईचारे, विष्णु भजन, पर्यावरण रक्षा, यज्ञ आदि का संकल्प लेकर ही हम सही अथो॑ में नववर्ष का स्वागत कर सकते हैं। यदि हम एक संकल्प ले लें तो उपर्युक्त सभी संकल्प अपने आप पूरे हो जाएंगे कि हम गुरु जंभेश्वर भगवान द्वारा बताए गए नियमों का अक्षरक्ष: पालन करेंगे।

नववर्ष 2012 की आप सभी को ढेर सारी मंगलमयी शुभकामनाएं। नववर्ष में चहुंओर सुख, समृद्धि और सम्पन्नता का वास हो, ज्ञान व धर्म का प्रकाश हो। गुरु जंभेश्वर भगवान से प्रार्थना कि नव वर्ष में-

सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:ख भाग भवेत॥

(सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमयी घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दु:ख का भागी न बनना पड़े।)

गुरुवाणी

सबद – 4

उधरण कान्हावत बूझियो, जम्भगुरु से भेव।
आपरी उमर थोड़ी दीसै, किता दिना रा देव।
जो बूझयों सोई कह्यों, अलख लखायों भेव।
धोखा सभी गमाय के, शब्द कह्यों जम्भदेव।

कान्हाजी के पुत्र उधरण ने फिर पूछा- हे देव! आपने बातें तो बहुत ही ऊंची बतलायी ऐसा मालूम पड़ता है कि आपने बहुत वर्षों तक विद्याध्ययन किया है किंतु आपकी आयु तो बहुत ही थोड़ी दिखाई देती है, आप कितने वर्षों के हैं। तब गुरु जांभो जी ने जैसा पूछा था वैसा ही उत्तर सबदवाणी के द्वारा दिया और कहा-

ओ३म् जद पवन न होता पाणी न होता, न होता धर गैणारूं।

महाप्रलयावस्था में जब सृष्टि के कारण रूप आकाशादि तत्त्व ही नहीं रहते, वे अपने कारण में विलीन हो जाते हैं तथा पुन: सृष्टि प्रारंभ अवस्था में अपने कारण से कार्य रूप से परिणित हो जाते हैं, यही क्रम चलता रहता है। श्री देवजी कहते हैं कि जब सृष्टि की उत्पत्ति नहीं हुई थी उस समय सृष्टि के ये कारण रूप पवन, जल, पृथ्वी, आकाश और तेज नहीं थे। जैसा इस समय आप देखते हैं वैसे नहीं थे, अपने कारण रूप में ही थे।

चन्द न होता सूर न होता, न होता गिंगंदर तारूं।

उस समय सूर्य, चन्द्रमा नहीं थे तथा ये आकाश मण्डल के तारे भी नहीं थे अर्थात् अग्नि तत्त्व का फैलाव नहीं हुआ था। यानि अग्नि स्वयं कार्य रूप में परिणित नहीं हो सकी थी।

गऊ न गोरू माया जाल न होता, न होता हेत पियारूं।

तथा अन्य पृथ्वी तत्त्व का पसारा भी तब तक नहीं हो सका था जो प्रधानत: गाय-बैल के रूप में प्रसिद्ध हैं तथा तब तक ईश्वरीय माया ने अपनी गति विधि प्रारम्भ नहीं की थी। सभी जीव-आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप में ही स्थित थे। माया ने अपना जाल अब तक नहीं फैलाया था। जिससे प्रेम, मोह, द्वेष आदि भी नहीं थे किंतु सभी कुछ सामान्य ही था।

माय न बाप न बहण न भाई, साख न सैण न होता पख परवारूं।

तब तक माता-पिता, बहन-भाई सगा-सम्बन्धी मित्र आदि परिवार का पक्ष नहीं था। जीव स्वयं अकेला ही था। मोह माया जनित दुख से रहित चैतन्य परमात्मा हिरण्यगर्भ के रूप में स्थित था।

लख चौरासी जीया जूणी न होती, न होती बणी अठारा भारूं।

चौरासी लाख योनियां भी तब तक उत्पन्न नहीं हुई थी अर्थात् मनुष्य आदि जीव भी सुप्तावस्था में ही थे। अठारह भार वनस्पति भी उस समय नहीं थी। (शास्त्रों में वर्णित है कि कुल वनस्पति अठारह भार ही है यह भार एक प्रकार का तोल ही है।)

सप्त पाताल फूंणींद न होता, न होता सागर खारूं।

सातों पाताल तथा पाताल लोक का स्वामी पृथ्वी धारक शेष नाग भी नहीं था। यहां पर केवल पाताल लोकों का ही निषेध किया है, इसका अर्थ है कि अन्य उपरि स्वर्गादिक लोक तो थे तथा खारे जल से परिपूर्ण समुद्र भी उस समय नहीं था।

अजिया सजियां जीया जूणी न होती, न होती कुड़ी भरतारूं।

जड़, चेतनमय दोनों प्रकार की सृष्टि उस समय नहीं थी तथा उन दोनों प्रकार की सृष्टि के रचयिता माया पति सगुण-साकार ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देव भी तब तक नहीं थे। आकाशादि सृष्टि के उत्पत्ति के पश्चात् ही सर्वप्रथम विष्णु की उत्पत्ति होती है, विष्णु से ही ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है, ब्रह्मा ही अपनी झूठी मिथ्या माया से जगत की रचना करते हैं ऐसी प्रसिद्धि है इसलिए उस समय कूड़ी, झूठी माया तथा माया पति दोनों ही नहीं थे, तब जड़ चेतन की उत्पत्ति भी नहीं थी।

अर्थ न गर्थ न गर्व न होता, न होता तेजी तुरंग तुखारूं।

उस समय ये सांसारिक चकाचौंध पैदा करने वाले धन दौलत तथा उससे उत्पन्न होने वाला अभिमान नहीं था। चित्र-विचित्र रंग-रंगीले तेज चलने वाले घोड़े, भी उस समय नहीं थे।

हाट पटण बाजार न होता, न होता राज दवारूं।

श्रेष्ठ दुकानें, व्यापारिक प्रतिष्ठान, बाजार आदि दिग्भ्रमित करने वाले राज-दरबार भी उस समय नहीं थे। जो इस समय यह उपस्थित चकाचौध तथा राज्य प्राप्ति की अभिलाषा जनित क्लेश है उस समय नहीं था।

चाव न चहन न कोह का बाण न होता, तद होता एक निरंजन शिम्भू।

इस समय की होने वाली चाहना यानि एक-दूसरे के प्रति लगाव या प्रेम भाव, खुशी से होने वाली चहल-पहल, उत्सव तथा क्रोध रूपी बाण भी उस समय नहीं थे। प्रेम तथा क्रोध दोनों ही अपनी-अपनी जगह पर स्थित होकर मानव को घायल कर देते हैं, यह स्थिति उस समय नहीं थी तो क्या? कुछ भी नहीं था। उस समय तो माया रहित एकमात्र स्वयंभू ही था।

कै होता धंधूकारूं बात कदो की पूछै लोई, जुग छतीस विचारूं।

या फिर धंधूकार ही था। पंच महाभूतों की जब प्रलयावस्था होती है तब वे परमाणु रूप में परिवर्तित हो जाते हैं, उन परमाणुओं से धन्धूकार जैसा वातावरण हो जाता है। हे सांसारिक लोगो! आप कब की बात पूछते हो? यदि आप कहें तो एक या दो युग नहीं, छतीस युगों की बात बता सकता हूं।

तांह परैरे अवर छतीसूं, पहला अन्त न पारूं।

तथा छतीस युगों से भी आगे की बात बता सकता हूं तथा उन छतीस से भी पूर्व की बात बता सकता हूं। उससे पूर्व का तो कोई अन्त पार भी नहीं है।

म्हे तदपण होता अब पण आछै, बल बल होयसा कह कद कद का करूं विचारूं।

जब इस सृष्टि का विस्तार कुछ भी नहीं था, इसलिए मैं बता भी सकता हूं कि उस समय क्या स्थिति थी। इस समय मैं विद्यमान हूं और आगे भी रहूंगा। हे उधरण! कहो कब कब का विचार कहूं। अर्थात् आप लोग मेरी आयु किस किस समय की पूछते हैं? मैं अपनी आयु कितने वर्षों की बतलाऊं।

❑ साभार-जंभसागर

बधाई हो बधाई

श्रीमती रेणुका बिश्नोई ने किया विधानसभा में पदार्पण

हरियाणा की राजनीति में 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी का परिवार अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। चौ. साहब स्वयं तीन बार प्रदेश के मुख्यमंत्री व दो बार केन्द्रीय मंत्री रहे थे। 9 बार विधायक, तीन बार सांसद (लोकसभा) व एक बार सांसद (राज्यसभा) चुने जाने का गौरव चौ. भजनलाल जी को मिला था। उनके परिवार के अन्य सदस्यों में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जसमां देवी सन् 1987 में आदमपुर से विधायिका चुनी गई। चौ. भजनलाल जी के ज्येष्ठ पुत्र चौ. चंद्रमोहन जी कालका से चार बार विधायक व हरियाणा के उपमुख्यमंत्री रह चुके हैं। उनके छोटे पुत्र चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई आदमपुर से दो बार विधायक रह चुके हैं व वर्तमान में हिसार से सांसद हैं। इससे पहले वे सन् 2004 में भिवानी से भी सांसद रह चुके हैं। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए चौ. भजनलाल जी की पुत्रवधू श्रीमती रेणुका बिश्नोई धर्मपत्नी चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई ने भी आदमपुर का उपचुनाव जीतकर हरियाणा की विधानसभा में दस्तक दी है।

श्रीमती रेणुका बिश्नोई ने 30 नवम्बर, 2011 को आदमपुर विधानसभा क्षेत्र के लिए हुए उपचुनाव में हजकां-भाजपा गठबंधन के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ते हुए 22669 वोटों से विजय प्राप्त की। श्रीमती रेणुका बिश्नोई ने इस उपचुनाव में 50276 वोट प्राप्त किए जबकि उनके प्रतिद्वन्द्वी कांग्रेस के प्रत्याशी कुलबीर बैनीवाल को 27607 वोट व इनेलो के प्रत्याशी को 21811 वोट ही मिले। श्रीमती रेणुका बिश्नोई का यह पहला ही चुनाव था जिसमें उन्होंने शानदार विजय प्राप्त की। इससे पहले भी श्रीमती बिश्नोई चौ. कुलदीप बिश्नोई के चुनाव में प्रभावी चुनाव प्रचारक के रूप में कार्य कर चुकी है। उनके व्यवहार व विचारधारा से प्रभावित होकर ही आदमपुर की जनता ने उन्हें यह मान-सम्मान दिया है।

स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त श्रीमती रेणुका बिश्नोई का जन्म दुतरांवाली (पंजाब) निवासी श्री उदयपाल जी बागड़िया के घर 1 सितम्बर, 1973 को हुआ था तथा

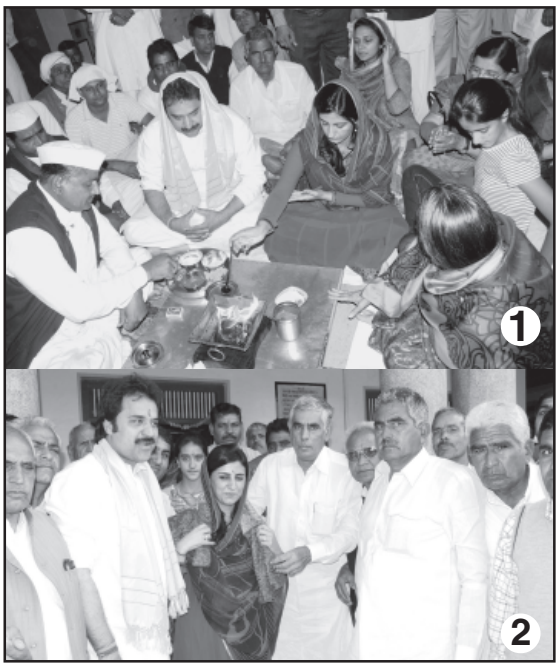

(1) विजय प्राप्ति के पश्चात् बिश्नोई मंदिर, हिसार में यज्ञ में आहुति देते श्रीमती रेणुका बिश्नोई, साथ हैं चौ. कुलदीप बिश्नोई व श्रीमती जसमां देवी। (2) बिश्नोई मंदिर पहुंचने पर श्रीमती रेणुका बिश्नोई को शाल भेंट कर स्वागत करते बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू व पदाधिकारीगण।

इनका विवाह 18 नवम्बर, 1991 को चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई के साथ हुआ। श्रीमती बिश्नोई समाज सेवा में विशेष रूचि रखने वाली व्यवहार कुशल महिला है। ध्यातव्य है कि आदमपुर विधानसभा सीट पर पिछले लगभग 44 वर्षों से चौ. भजनलाल का ही परिवार जीतता आ रहा है।

श्रीमती रेणुका बिश्नोई को राजनीति में पदार्पण करने, प्रथम बार विधायिका बनने व शानदार विजय प्राप्त करने पर अमर ज्योति पत्रिका व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व गुरु महाराज से प्रार्थना की आप राजनीति के क्षेत्र में दिन दुगनी, रात चौगुनी उन्नति करें व चौ. भजनलाल जी की भांति समाज व प्रदेश का नाम रोशन करें।

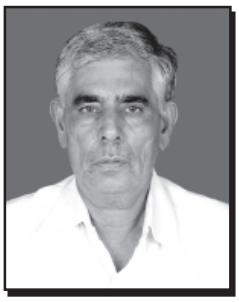

सम्पूर्ण समाज व पूरे देशवासियों को बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से नववर्ष 2012 की हार्दिक बधाई। बिश्नोई सभा, हिसार गुरु जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करती है कि यह नववर्ष आप सबके लिए मंगलमय हो। इस नव वर्ष में हमारा आपसी प्रेम व सहयोग निरंतर बढ़ता रहे। सब जगह सुख–समृद्धि और प्रसन्नता का प्रसार हो। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आप सबका स्नेह सहयोग व मार्गदर्शन बिश्नोई सभा, हिसार को मिलता रहे। पुनः आप सबको नववर्ष 2012 की ढेरों शुभकामनाएं।

सुभाष देहडू, प्रधान
बिश्नोई सभा, हिसार

हो पूरी सारी आशाएं
सामस्वस्ति से
सजे दिशाएं
सीप में मोती दीप में ज्योति
जैसा सुफल समय हो
नव स्वप्नों सा सूर्य उदय हो।
नया साल मंगलमय हो॥

भगवान जाम्भोजी का अलौकिक व्यक्तित्व

दिव्य एवं अवतारी महापुरुषों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व संसारिक जीवों के लिए ही दिव्य संदेश लेकर अवतरित होता है। गुरु जाम्भोजी ऐसे ही दिव्य अवतारी महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व अलौकिक तत्वों का पुञ्ज था। वे सांसारिक बन्धनों और मूलभूत शारीरिक आवश्यकताओं के बन्धन से सर्वथा जन्म (अवतार) से ही मुक्त थे। पंथ के बहुत से जांभाणी संतों ने बाल लीला के सम्बन्ध में अनेक चमत्कारिक घटनाओं का उल्लेख किया है। जैसे जन्म के पश्चात जन्मघुट्टी ना लेना, मां का स्तनपान न करना, पलकें न झपकना, भूख प्यास न लगना, नींद न लेना, पीठ के बल न लेटना, उनका क्रांतिमान वैभव एवं दिव्य शरीर चारों ओर से दिखना, सदैव मौन रहना आदि निश्चित तौर पर सिद्ध पुरुषों के अवतारी लक्षण उनमें विद्यमान थे। तत्पश्चात् सामान्य लोक व्यवहार से भिन्न व्यवहार, शारीरिक आवश्यकताओं के प्रति मुक्त रहना यानी पूर्णतया निराहारी, उनके भौतिक शरीर की छाया न पड़ना, चलते समय पैरों के निशान ना पड़ना, शरीर से विशेष सुगन्ध आना आदि सभी गुण सामान्य पुरुषों के लक्षण न होकर आलौकिक व्यक्तित्व के लक्षण होते हैं। इस प्रकार के जीवन मुक्त एवं दिव्य गुणों से मिश्रित व्यक्तित्व निश्चय ही देवत्व के लक्षण होते हैं। निश्चय ही गुरु जाम्भोजी अवतारी पुरुष थे।

महात्मा वील्होजी तो यहां तक लिखते हैं कि उनके अवतार के समय सभी देवताओं को अपार हर्ष हुआ और यह हर्ष की लहर सातों द्वीपों तक पहुंची थी। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड कंपायमान हो गया था। चूंकि शारीरिक आवश्यकताओं पर विजय पाना जीवन मुक्त पुरुषों के लक्षण, पलकें न झपकना, मौन रहना सिद्ध पुरुषों के लक्षण, शरीर से विशेष सुगन्ध आना, बाल लीलाएं करना अवतारी लक्षण तथा शरीर की छाया न पड़ना और पैरों के निशान न पड़ना अवतारी पुरुषों के लक्षण हुआ करते हैं। गोचारण काल में भी गुरु जाम्भोजी ने अधिकतर जंगल और विशेषकर सम्भराथल धोरे पर ही मौनवस्था एवं ध्यानावस्था में ही व्यतीत किया। वे अपने सिद्धि बल से कोसों दूर चरने गए पशुओं को संकेत भर से ही पास बुला लेते थे। संकेतों से ही सभी पशुओं को बारी-बारी पानी पीने का आदेश करते, अन्य पशु चारकों के साथ खेल में उनको तुरन्त ढूंढ निकालना, स्वयं को कई जगह दर्शाना, जमीन में धंस कर पाताल लोक पहुंचना, अपने पिता को जल हेतु बिना बादल वर्षा करवाना आदि निश्चित रूप से अलौकिक शक्तियों एवं रूपों के स्वयं सिद्ध प्रमाण हैं।

श्री गुरु जाम्भोजी के अलौकिक व्यक्तित्व को समझने के लिए सर्वाधिक प्रमाणिक आधार उनके श्री मुख से उच्चारित उनकी वाणी जो सबदवाणी है, जो प्रश्नोत्तर के रूप में अनेकों जिज्ञासु भक्तों को उनकी शंकाओं के समाधान हेतु उच्चारित की थी। यानी जाम्भोजी महाराज ने स्वयं ही अपनी अलौकिकता का रहस्योद्घाटन किया था। सर्व प्रथम जब बीदो एवं उदो राठौड़ राजपुत्रों ने जाम्भोजी के पास ऊंटनियों को डाकुओं से छुड़ाने के पश्चात् धन्यवाद करने गये तो उनके अलौकिक रूप को देख कर उदो ने वीदो राठौड़ से कहा- (क) **देव जी किसी अचार पेट पुठ दीसै नहीं ताके।** (ख) **देखहु सरदार ऐहि कहु, पीठ पूठ न दीस ही कहो विचार। उधरण कान्हावत यूं कहयो। ब्रह्म विष्णु तथा संकर, परम पुरुष जगदीस ही'**
तब उनको उत्तर के रूप में स्वयं जाम्भो जी ने शब्द कहते हुए यूं समझाया-
मोरे छाया न माया, लोही न मांसु रक्तू न धातू मोरे माई ना बापू..... आद अनाद तो हम रचिलो..... म्हें जोगी के भोगी कै अल्प अहारी..... निज बाला ब्रह्मचारी'

सबदवाणी के अन्यत्र कई स्थानों पर जाम्भोजी ने अपने दिव्य रूप के बारे ऐसा वर्णन किया है।

(क) 'रूप अरूप रमूं प्यंड ब्रह्मडयै, घटि घटि अघट रहायौ'

(ख) 'ना मेरे माया ना मेरे छाया रूप न रेखा, बाहर भीतर अगम अलेखा'

(ग) 'नव अवतार नमो नारायण तेपणि रूप हमारा थीयौ'

(घ) 'म्हे जोगी के भोगी अल्प अहारी ग्यानी के ध्यानी निज क्रमधारी'

(ङ) 'अंत जुगा में अमर भणीजू ना मेरे पिता न मायो'

(च) 'मोरी आद न जाणत, महियल धूंवा बखाणत भगवी टोपी थलसिरि आयो हेत मिलाण करीलौ'

(छ) 'अै जुग प्यारी छतीस अवसर छतीसा, असरा बहै अधीरा, म्हं तो खड़ा बिहायौ तैंतीसा की बरंग कहा म्हे बारा काजे आयौ'

(ज) 'पीवत जीवत भोगत विलसत दिसां नाही महापण को आधारो'

हजूरी कवि कान्हो जी बारहट ने जाम्भोजी के रूप का वर्णन करते हुए लिखा है –

'त्रिषा नींद खुध्या नाही, जीवो भगतो आलीगार आदि बिसन समराथल आयौ लंक तणो गंठ लेवणहार'

महात्मा सुरजन जी की साखियों में जाम्भोजी के दिव्य रूप का वर्णन यूं आया है –

(क) **'रगत न पीति नहीं पिंड जां का, सास न मांस समावै, तिसना भूख सूबै नर नाहीं, सहज्य समाध्य लगावै'**

(ख) **काम क्रोध न मोह माया भूख नींद न कांय ब्रह्म ग्यान नियान केवल, शब्दन की धुन लाय चलते खोज न खड़े छाया सहज शून्य समाय, ध्रम मुरति क्रम नासति तीन्य लोक सहाय**

(ग) **शिव मछ कछ वाराह नृसिंह बावर परस बुध वणो ना कियो किसन कियो झाभेसर जीवतै सुखा दिखाल्यो जणै'**

(घ) **'मेरा गुरु केवल न्यानी, ब्रभग्यानी भाज मोह न किया जागत जोगी नींद न सुता, वासा भोम्य न लीया जीती तिसना आसा पवणा पाणी जीण वंस किया तथा न मेडे पासा'**

(ङ) **'सोवे नहीं पीठ धर सोय, धरती अंग न लावै कोय नीर दूध नहीं लई आहार, भूख प्यास नहीं नींद व्यवहार'**

एक अज्ञात हजूरी कवि अपने प्रसिद्ध छन्द में लिखा है कि गुरु जाम्भोजी की पीठ दिखलाई न पड़ती थी। चहुं ओर मुख के ही दर्शन होते थे। उनका छन्द बहुत ही प्रसिद्धि से गाया जाता है जो इस प्रकार से है–

जम्भ गुरु जगदीश ईस नारायण स्वामी
निरपेषक निरलेप सकल धर अंतरजामी
पेट पूठ न तांही सकल कू सनमुख दरसै
पाप ताप तन जरै जाहि पद पंकज परसै
अखै अडोल अनादि अज अवगत अलख अभेव
स्वसरूपी आप हैं जम्भगुरु जगदेव'

हजूरी कवि उदो जी नैण ने अपनी एक साखी में लिखा है कि श्री जम्भदेव जी पूर्णत: निरहारी और युगों–युगों की कथा बताते थे।

'आसण मांड बैठो रहमाणी, जीमै अन्न न पीवै पाणी जुगा–जुगा की कहै कहाणी, जम्भदेव जुगा पर वाणी'

उन्होंने अपनी एक आरती में भी कहा है– 'तीसरी आरती त्रिशुल ढापै, क्षुधा, त्रिसना, नींद नहीं व्यापै। चौथी आरती चहुदिस परसै, पेट पुठ नहीं सनमुख दरसै' एक साखी में उद्धो जी ने जाम्भो के अवतार बारे लिखा है– 'अनंत कला अवतार सो पूर्ण ब्रह्म पधारिया' लगभग सभी कवियों ने जाम्भो जी को विष्णु का अवतार मान कर सम्बोधित किया है।

'प्रहलाद कृष्णा के कंवल से आए जम्भ नरेश कृष्ण कंवल के कारणौ गुरु जम्भ लियो अवतार'

सुरजन जी लिखते हैं –

'पोहमी पीतांबर आविसौ, प्रगटयो कृष्ण मुरार'

कवि केशो जी लिखते हैं–

'भगवै बानै विष्णु आयो, आप लियो अवतार'

महात्मा सुरजन जी अपने एक हरजस में लिखते हैं–

'काम क्रोध न मोह माया, भूख नींद न काय
ब्रह्मयान नियान केवल सबदों की धुन्य लाय
चलत खोज न खड़े छाया, सहज शून्य समाय
ध्रम मुरति क्रम नासति तीन्य लोक सहाय
पीपासर प्रकासिया गुरु देवन के देव
ब्रह्मादिक पावै नहीं, अद्‌भुत जाको भेव'

जब राव वीदा ने जाम्भो जी के शरीर से आने वाली सुगन्ध का रहस्य पूछा

वीखे जोधावत कहै सोरम आवै देव
डील तुम्हारे महि मां, हमें बतावो भेव

तो जाम्भोजी ने वीदे की शंका समाधान करते हुए कहा कि मेरे शरीर में किसी प्रकार का सुगन्धित तेल, परमल, इत्र आदि नहीं लगाया हुआ है। मैं चूंकि किसी प्रकार का आहार ग्रहण नहीं करता हूं और न ही भोग विलास करता हूं, मेरा शरीर मलमूत्र वाला शरीर नहीं है। बस यही मेरी सुगन्ध का आधार है।

'मोरे अंग न अलसी तेल न मलियो ना परमल पिसायो
जीमत पीवत भोगत विलसत नाही, महापण को आधारो'

बीकानेर नरेश लुणकरण जी (जो जाम्भो जी के समकालीन थे) ने जाम्भो जी की स्तुति करते हुए लिखा है कि–

भक्त मुक्त दातार, जग जगदीश्वर कहीऐ
थल सिर रहयो जु आय, भाग बड़े सू लहियै
ओलखीयो आचार, पार कहो कुण जू पावै
सारा सनमुख रहै, दई नहीं पुठ दिखावै
जोजन लग महकार, श्रीखण्ड जिमी निति आवै
किसतुरो ते अधिक, सुवास परमल महकावै'

कन्नौज का एक विद्वान ब्राह्मण काशीनाथ जो जाम्भोजी से भेंट करने सम्भराथल आया था ने महक बारे लिखा है कि–

जोजन एक रहयो जब दूरी, परमल रही सकल भरपुरी
जम्भगुरु को ईह प्रतापा, जोजन से ही खन्डित होय पापा
मन की मैल कपर नस जावै, सुनत ही शब्द सुध हुय जावै

संत केशो जी कृत 'कथा मेड़ते की' की में राव दूदा और राव सान्तिल के बीच हुए वार्तालाप में गुरु जाम्भोजी के शरीर से आने वाली सुगन्ध की चर्चा का वर्णन इस प्रकार से बताया–

'सुणियो जोजन एक विचारा, कायां थे आवै महकारा
बस्ती बिन्या सुगन्ध कैंथ, कायरी आवै सोरम ऐथ
दूदै जदि यू कहयो विचारो, आ तो आवै हरिकाया
की महकारो'

कवि परमानंद जी वणियाल ने अपने एक हरजस द्वारा जाम्भोजी की महिमा का यूं वर्णन किया–

'जोजन धुन सवदन की सुणिय, घट परमल की बास
चहुं दिस सनमुख पीठ नहीं दीसै, कोड़ भान परकास
चालत खोज, खेह न खटको, नहीं दीसै तन छाया
तीसनां भूख नीद नहीं आवै, काम क्रोध घट नाय।'

कवि परमानन्द ने अपनी एक छन्दों की साखी में गुरु महाराज के दिव्य रूप का वर्णन यूं किया–

'सपत दीप शोभा सुणी नै, आवियो हरि आप
खुध्या तिसना नींद नाही, जाके नहीं संताप
छाया खोज न आपदा नै, कलु आगवियो किसन
करतार पार पावै कवण, आवियो आदि विसन'

कवि केशो जी ने अपनी एक रचना 'कथा इसकंदर' की में सुलतान द्वारा जाम्भोजी के पास भेजे गए काजी को उनकी पहचान के बारे में इस प्रकार बताते हैं–

'पातेशाह कहै एक परवाण, जम्भ गुरु की आ सहनाण
खुध्या तीसनां नींद न आवै, परमन की परगट कवै
छाया खोज न दीसै राह, सोई अगम अथाह
पातसाह काजी सु कही, साचा सतगुरु साचा राह'

भगवान जम्भदेव के भ्रमण के समय जब वे कालपी में थे तो उनके शिष्य बादशाह स्वातिशाह दर्शनार्थ आए। दर्शनों में वे जाम्भोजी के दिव्य रूप को देख कर हैरान

हुए और कहा–

'दे प्रकरमा बैठत भयेऊ, स्वायत देख अचंभै रहेऊ जहां दसै तहां मुख ही दर्शे, खुदाय ताला ऐ तो प्रमसा हाड मास न रूह न राया, अर्द्ध ऊर्द्ध न जाने माया'

इसी प्रकार एक समय जब जाम्भोजी महाराज सैंसों भक्त का अभिमान खंडन करने हेतु जब झिंझाले धारे पर मौजूद थे तब असंख्यों नर नारी दर्शनार्थ एकत्र हुए थे, ने जाम्भो जी का दिव्य रूप इस प्रकार बखान किया–

'प्रभु पूठ दीसे नहीं, दई जू धारी देह
सन्मुख जा बन आवही, जम्भ अचंभौ ऐह'

कवि केशो जी ने अपनी कथा 'सैंसो जोखाणी में लिखा है कि जाम्भो जी अवतारी पुरुष थे और चारों और उनका मुख ही दिखाई देता था–

'चाकर ठाकर एक सा सेह देख दीदार
जण जण सामहं, ऊं जाणी जे अवतार
पुठि परति नै दीसई, दई ज धारी देह
ओल्ह आप न आवही, जम्भ अचंभौ एह'

कवि दसुधीदास ने अपनी कविता में लिखा है कि गुरु जी की चलते समय छाया भी नहीं बनती थी और भूख प्यास नींद उनमें नहीं थी।

'चालत की छाह नहीं, नीद भूख व्यापे नहीं सबद सुनाया है,
कहत दसुंधीदास सुचिल सीनान सझि कंचन सी काया को कलश बनाया है।'

इसी प्रकार जाम्भोजी के चरण चिह्न कभी नहीं बनते थे केवल इलोल वश ही कभी कभार चरण चिह्न बनते थे जैसे नोरगी का भात भरने गए तब वहां एक पत्थर पर चरण चिह्न बने जो रोटू में है। इसी प्रकाश इलोल वश लोहवट की साथरी में चरण चिह्न बने जो वहां पर मौजूद हैं। गांव मनाणे में भी एक भक्त ने चरण चिह्न बना कर रखे थे–

'पत्थर पर प्रभु चरण जू देएऊ, ताकी जड़ पताल जू गएऊ चरण चहन उपर मंड गएसी, जब लग गंगा तब लग रहेसी'

जांभाणी के परवर्ती कवियों में सर्व प्रमुख कवि संत वील्होजी की वाणी में हजूरी कवियों के कथनों की पुष्टि भी मिलती है। उन्होंने अपनी एक प्रसिद्ध साखी (उमाही) में लिखा है–

'भूख नहीं तिसना नहीं, गुरु मेल्ही नींद निवारी
काम कुवध्य व्यापै नहीं, तिंह गुऊ कू बलिहारी'

तथा एक प्रमोद रूपी छपैया में इस प्रकार पुष्टि की है–

'पुरुष एक परगटयो, पाप पुनः स्यध्य करंतौ
नहीं भूख तीस नींद, रहै निरहार नीरंतौ'

जांभाणी काव्यधारा के महाकवि साहब राम जी ने अपनी महान कृति 'जम्भसार' में अनेक स्थानों पर उपर वर्णित कवियों के कथनों को दोहराते हुए लिखा है–

'ताके अंगी तत की काया, हाड न मांस न धुप न छाया
तब जो ऋषि ख्यान्त कर देखा, चत्र भुजा मुख चार विशेषा'

उपर्युक्त कवियों के कथन जिनमें समकालीन एवं परवर्ती दोनों प्रकार के कवि हैं तथा जो समकालीन महात्मा शिष्य भी थे इसके अतिरिक्त अन्य परम हजूरी अन्य अनुयायी भी आते हैं एवं जाम्भो जी के स्वयं श्रीमुख से उच्चारित शब्दों के विश्लेषण से यह पूर्णतया आभास ही नहीं बल्कि विश्वास योग्य है कि गुरु जाम्भो जी जीवन मुक्त अवतारी महापुरुष थे और उनका व्यक्तित्व पूर्ण रूपेण आलौकिक था। अवतार से मोक्ष तक निराहार रहना, काम, क्रोध, मोह, लोभ, तृष्णा से रहित होना, नींद न लेना, शरीर से दिव्य सुगन्ध आना, चारों ओर मुख के ही दर्शन होना, पद चिह्न व शरीर की छाया न बनना साधारण पुरुष के लक्षण नहीं हो सकते। निश्चय ही वे अवतारी पुरुष थे। जम्भवाणी व जांभाणी साहित्य में जाम्भोजी के ऐसे अलौकिक गुणों का सविस्तार वर्णन मिलता है।

– **जयप्रकाश बिश्नोई**, एडवोकेट
पूर्व सम्पादक, अमर ज्योति
270, डिफैंस कालोनी, हिसार

नव वर्ष कामना

नया वर्ष आ खडा द्वार पर, ले नूतन संदेश।
उर में ले संकल्प बदल दो, यह कलुषित परिवेश॥
नये वर्ष के नव प्रभात में, खिले नवल जलजात।
ज्ञान रूप रवि रश्मि मिटादें,अज्ञ अंधेरी रात॥
कलह ईर्ष्या द्वेष त्याग सब, मिलों डाल गल बांह।
उन्नतीस नियम धार उर बैठों, जल धर्म ध्वज छाँह॥
अमृत मयी गुरु वाणी का, घर-घर में हो जाप।
हर आंगन आनन्द मग्न हो, मिटें सकल संताप॥
बिश्नोई बन जियो जगत में, जम्भ सीख उर धार।
मानवता के परिवर्द्धन हित, रहो सदा तैयार॥
तजो संकुचित भाव हृदय के, कर गुरु मत प्रसार।
उन्नतीस नियम सबदवाणी मय, हो जाये संसार॥
घृणा द्वेष से जनित ज्वाल में, जलता हर घर द्वार।
करो शान्त गुरु ज्ञान सलिल की, कर शीतल बौछार॥
मानव की आगत पीढ़ी को, मिले सुखद परिवेश।
प्रेम और बन्धुत्व भाव रंग, रंगे देश परदेश॥
'सेवक' का साकार स्वपन हो, पूरी हो अभिलाष।
नूतन वर्ष ज्ञान तम हर कर, देय ज्ञान प्रकाश॥

- राजकुमार बिश्नोई 'सेवक'
ग्राम रसूलपुर गुजर, पो. कांठ, जिला मुरादाबाद (यूपी)

नये साल का अभिनन्दन है

नये साल का स्वागत करके, नूतन आस जगाने दो।
कल क्या होगा, कौन जानता, मन की प्यास बुझाने दो।

क्या खोया, क्या पाया कल तक, अनुभव के संग ज्ञान यही।
इसी ज्ञान से कल हो रोशन, यह विश्वास बढ़ाने दो।

जो न सोचा, हो जाता है, नहीं हारते सच्चे वीर कभी।
सच्ची कोशिश, प्रतिफल अच्छा, बातें खास बताने दो।

कल आयेगा, बीता कल भी, नहीं किसी पर वश अपना।
अपने वश में वर्तमान बस, यह आभास कराने दो।

जितने काँटे मिले सुमन को, बढ़ती है उतनी खुशबू।
खुद का परिचय संघर्षो से, यह एहसास कराने दो।

- श्यामल सुमन, भोपाल (मध्यप्रदेश)

नये सुन्दर साल में

HAPPY NEW YEAR 2012

नये सुन्दर साल में
खुश रहो हर हाल में।
जाम्भो जी का
आशीर्वाद लो।
जम्भ भक्ति का
तुम प्रसाद लो।
नये सुन्दर साल में
खुश रहो हर हाल में।

शुभकामना हो
शुभभावना हो
बुरा न सोचो
किसी हाल में
नये सुन्दर साल में
खुश रहो हर हाल में।

सम्मानित हो सदा
अलंकृत हो सदा
दगा न करो कभी
न फंसो बुरे ख्याल में
नये सुन्दर साल में
खुश रहो हर हाल में।

भ्रष्टाचार दूर हो
आतंकवाद चूर हो
नफरत तार-तार हो
प्रेम बढ़े हर हाल में
नये सुन्दर साल में
खुश रहो हर हाल में।

समाज का निर्माण हो
देश का कल्याण हो
हाथ में रामबाण हो।
दुश्मन भागें हर हाल में
नये सुन्दर साल में
खुश रहो हर हाल में।

सुख और शांति मिले
यश और कीर्ति मिले
अमर ज्योति जगे मन में
'सुधाकर' हर हाल में
नये सुन्दर साल में
खुश रहो हर हाल में।

ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'
अध्यक्ष अ.भा. जीवरक्षा, बिश्नोई सभा, दिल्ली

तुम्हारा स्वागत है नववर्ष

पारिजात शुभ गंध बिखेरे
नयनों में फिर सपने तैरे
भूले सब अवसाद भरे क्षण
खिले कुसुम महके नंदन वन
मिले फिर जन जन को उत्कर्ष
तुम्हारा स्वागत है नववर्ष।

झूम झूम कर कोयल गाए
अमराई खिल खिल बौराए
सौरभ हर आंगन में उतरे
दर्पण दर्पण राधा संवरे
धूम हो गली गली में हर्ष
तुम्हारा स्वागत है नववर्ष।

ढोल मृदंग झांझ डफ झनके
आंगन आंगन पायल छनके
दिन होली हो रात दिवाली
कभी न आए आंधी काली
न हो अब दुनिया में संघर्ष
तुम्हारा स्वागत है नववर्ष।

– **मृगेन्द्र वशिष्ठ**, बढ़वाली ढाणी, हिसार

नए साल की शुभकामनाएं

दिलों में हो फागुन, दिशाओं में रुनझुन
हवाओं में मेहनत की गूँजे नई धुन
गगन जिसको गाए हवाओं से सुन-सुन
वही धुन मगन मन, सभी गुनगुनाएँ।
नव वर्ष की शुभकामनाएँ

ये धरती हरी हो, उमंगों भरी हो
हरिक रुत में आशा की आसावरी हो
मिलन के सुरों से सजी बाँसुरी हो
अमन हो चमन में, सुमन मुस्कुराएँ।
नव वर्ष की शुभकामनाएँ

– **अशोक चक्रधर,** दिल्ली

नव वर्ष

वर्ष बदलता है तब हम भी बदलें,
अंक बारहवां छोड़, एक पर वापिस पहुंचें।
वरना सुई, इसी अंक पर अड़ी रहेगी,
आगे, जब नहीं राह, यहीं पर खड़ी रहेगी।
व्यर्थ रीतियां और नीतियों को अब छोड़ें,
नई राह और नए नए पथ को हम पकड़ें।

धुन पुरानी चाहे कितनी मन को भाये,
छोड़ें इसे, नई निराली तर्ज बनाएं।
अंक एक से, नई एकता को घर लाएं,
बारह का व्यापार छोड़, सब होश में आएं।
कदम जो पहला, प्रथम अंक से आगे रखे,
हो जीवन से भरपूर, नई शक्ति वह लाए।
नई उमंगें, नई तरंगें, नये नये विस्मय वह लाये।
आज तलक जो संभव न था,
वह सब सम्भव कर दिखलाएं।

ध्यान दूसरों की गलती पर अब न जाए,
ध्यान धरें अपने छिद्रों पर उनको पाटें
नए वर्ष में नए गुलाब के पौधे रौपें
नये सुगन्धित फूलों से बगिया को भर लें
भ्रमण हेतु, प्रातः उठने का क्रम बनाएं
बिन कसरत और बिना योग खाना न खाएं
करें अवश्य वह काम, पेट जो पूरा पाले,
और हो बुद्धि से काम, कभी न होवैं घाटे।

मन की तरंग को, सुर से झंकृत यदि कर पाओगे
मनोवांछित फल, वर्ष भर पाओगे।
सुख ऐसा दे, तुम करो प्रार्थना गुरु जम्भेश्वर से
हर्षित मन, पुलकित तन
बढ़ चलें, हम सबसे आगे।

– **शशिकांत शर्मा,** हिसार

कहानी

संवर गई जिंदगी

शहनाइयां बज रही थी। वर पक्ष के लोग नाच रहे थे तथा वधु पक्ष के लोग बारात के स्वागत के लिए पलक पांवड़े बिछाए बैठे थे। दुल्हे के दोस्तों पर तो विचित्र सा नशा छाया हुआ था। उनके थिरकते कदम रूकने का नाम नहीं ले रहे थे। तभी एक बुजुर्ग ने दुल्हे को घोड़ी से उतरने को कहा ताकि विवाह की रस्में यथा समय संपन्न हो सकें। परन्तु एक सिरफिरे ने उनके आदेश की अवहेलना कर नृत्य जारी रखने का ऐलान कर दिया।

परेश चुपचाप यह सब देखता रहा। तभी लड़की के पिता ने हाथ जोड़कर उनसे गुहार लगाई कि सब उनकी राह देख रहे हैं, इसलिए आप सब विवाह मंडप में प्रवेश करें।

परेश के पिता के संकत को सब समझ गए। घर की महिलाओं ने सारी रस्में अदा की तथा दोनों ने एक दूसरे के गले में जयमाला डाल दी। बाराती तो विवाह में अच्छे खाने की अपेक्षा रखते हैं सो सब प्रसन्नता से लौट गए। वर-वधु सात फेरों के बंधन में बंध गए तथा दुल्हन अपने जीवन साथी के साथ विदा हो गई। विदाई के अवसर पर उसे यह सीख दी गई कि 'अब पति का घर उसका घर है', उसे हृदय से अपना लेना, सबको मान-सम्मान देना तथा सबकी आकांक्षाओं पर खरा उतरने की चेष्टा करना। पिता के घर पति के साथ खुशी-खुशी आना।

घर परिवार के सदस्यों से ढेरों आशीष अपने आंचल में सहेज कर माधुरी उस घर से विदा हो गई। नए घर में उनके आदर्शों को शिरोधार्य कर वह सारी रस्मों को निभाती रही। मुंह दिखाई की रस्म में उसे लोगों की अनेक प्रकार की बातें सुननी पड़ीं। किसी ने उसे पतली और काली कहा तो किसी ने उसकी तारीफ की। किसी ने उसकी इतना पढ़ा-लिखा होने पर उसकी सादगी देख सराहना की तो किसी ने उसे कम दहेज लाने की बात कहकर उसके अंतर्मन को बेध डाला। पड़ोस की एक स्त्री ने उसे सचेत रहने की बात कह उसका मन आशंकाओं से भर दिया।

शाम को अपने कमरे में पहुंचने पर उसके शरीर का अंग प्रत्यंग दु:ख रहा था। पलंग पर लेटते ही उसकी आंख लग गई। परेश ने कमरे में प्रवेश करते ही कोहराम मचा दिया.... 'यही सिखाया है तुम्हारे माता-पिता ने.... महारानी की तरह सो रही हो... सब खाने की टेबल पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं.... इस घर में रहना है तो सलीके से रहना सीखो, वरना घर का द्वार खुला है।'

माधुरी परेश के अप्रत्याशित व्यवहार को देख परेशान हो उठी। उसे तो मानो सांप सूंघ गया। वह अपने वस्त्र समेट कर उठी और उससे क्षमा याचना करने लगी।

'मैं बहुत थक गई थी पता ही नहीं चला कब आंख लग गई, कहते हुए वह सीधी अपनी मां तुल्य सास के पास गई। माधुरी ने पांव छूकर सबका आशीर्वाद प्राप्त किया और उसकी ननद ने उसे परेश की साथ वाली कुर्सी पर बैठा दिया। सबने मिलकर खाना खाया और इस बीच रीता अपने भैया की चुटकियां लेती रही। माधुरी भी नजर बचाकर परेश के हाव-भाव देखकर आशंकित हो उठती थी।'

परेश का गुस्सा शांत नहीं हुआ था उसने रीता को डांट दिया और कहा 'कैसी भाभी पसंद की है तुमने... इसे तो मैनर्ज ही नहीं हैं। हां! आज इसे समझा देना कि मैं किसी के नखरे नहीं उठा सकता। मैं अपने माता-पिता और भाई-भाभी को भगवान से बढ़कर मानता हूं। यदि इसने इस घर में रहना है तो इसे उनकी हर बात माननी होगी।'

किसी को समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर माजरा क्या है? मां ने परेश को समझाते हुए शांत रहने को कहा कि 'उसे नई नवेली दुल्हन के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। माधुरी तुम्हारी पत्नी है।

परन्तु परेश पर तो मानो भूत सवार था। वह वहां से उठकर बाहर चला गया। रीता उसे अपने कमरे में लिवा ले गई। उसने माधुरी को बताया कि 'परेश को कभी-कभी हिस्टीरिया के दौरे पड़ते हैं और इस स्थिति में वह अपने क्रोध पर अंकुश नहीं रख पाता। वह दो घंटे में ठीक हो जाएगा। तुम यहां आराम करो.... मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम किसी प्रकार की टेंशन मत लो।'

यह सुनते ही उसके पांवों तले की जमीन खिसक गई। वह सोचने लगी कि 'उसके माता-पिता ने जानबूझकर उसे इस नरक में क्यों झोंक दिया है? क्या वह उन पर बोझा थी? वह तो आत्मनिर्भर है.... नौकरी कर रही है फिर उसके साथ धोखे से यह अन्याय क्यों?'

माधुरी के नेत्रों से अजस्त्र अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। रीता ने उसे चुप कराने का प्रयास किया परंतु सब व्यर्थ। उसने अपने माता-पिता से फोन पर यह जानने का प्रयास किया कि 'वे इस तथ्य से अवगत थे या नहीं। यदि नहीं थे तो उन्होंने बगैर छानबीन किए उसे बलि का बकरा क्यों बनाया और एक निरीह गाय की भांति उसके खूंटे से बांध दिया। क्या लड़की एक वस्तु मात्र है जिसे वे अपनी इच्छानुसार किसी के भी हाथ में सौंप सकते हैं? आखिर उन्हें उसके जीवन से खिलवाड़ करने का हक किसने दिया था?'

उसके माता-पिता के पास उसके प्रश्नों का उत्तर नहीं था। वह अपने भाग्य को कोस रही थी कि 'यह विधाता का कैसा न्याय है?' रीता ने माधुरी से कहा कि 'सब ठीक हो जाएगा। भैया को दो तीन महीने में यह दौरा पड़ता है। तुम्हारे धैर्य और सहयोग से भैया ठीक हो जाएंगे। तुम्हें घर में पूरा मान-सम्मान मिलेगा, प्यार मिलेगा। तुम्हें यहां किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा।'

माधुरी ने रीता से कहा..... 'दूसरे को नसीहत देना बहुत आसान है। तुम स्वयं को मेरी जगह रखकर देखो... यदि यह सब तुम्हारे साथ हुआ होता तो तुम्हारी क्या दशा होती...., कितना सभ्य है वह... कितना सलीका है उसे.... वह एक अहंवादी इंसान है, वह हृदयहीन है, पत्थर है। वह दूसरों की भावनाओं की अहमियत नहीं समझता है। उसे तो यह भी नहीं मालूम कि किस अवसर पर किससे कैसा व्यवहार करना चाहिए। तुम उसकी इसलिए तारीफ कर रही हो क्योंकि उससे तुम्हारा खून का रिश्ता है।

रीता! मैं इसी पल यह घर छोड़कर जा रही हूं कभी न लौटने के लिए। मैं अपनी जिंदगी की मालिक स्वयं हूं। मैं यह समझौता कर तिल-तिल कर नहीं जी सकती। हां... 'जब तुम्हारा भाई ठीक हो जाए... उसे रिश्तों की परिभाषा समझ आ जाए... और वह अवसर और परिस्थितियों के महत्त्व से परिचित हो जाए, उस दिन मुझ बतला देना। हां... मैं प्रतीक्षा करूंगी तथा तब तक मैं किसी बंधन में नहीं बंधूगी, न ही किसी पर यह हकीकत उजागर होने दूंगी... यह मेरा तुमसे वादा है।'

माधुरी को घर परिवार के लोगों ने रोकने का प्रयास किया। परंतु उसके बढ़ते कदम कोई भी नहीं रोक पाया। वह सीधी अपनी सहेली मीरा के यहां गई और उसने अपनी दास्तान उससे कह डाली।

मीरा ने उसे इस राह पर चलने से मना किया तथा अपनी ससुराल लौट जाने की सलाह दी, परन्तु वह अपने इरादे से टस से मस नहीं हुई। उसने मीरा को स्पष्ट शब्दों में बतला दिया कि वह सुबह होते ही वहां से चली जाएगी।

भोर की स्वर्णिम रश्मियों ने उसके जीवन में दस्तक दी और उनके उजास से उसके भीतर का तूफान थम गया। उसका हृदय अब शांत था। उसने निर्णय किया कि वह गरीबों का मुफ्त इलाज करेगी तथा अपना जीवन समाज सेवा में लगा देगी।

माधुरी ने अस्पताल से त्यागपत्र दे दिया और

अनजान शहर में जाकर एक ट्रस्ट के अस्पताल में नौकरी कर ली। वह दिन-रात काम में व्यस्त रहती तथा जो भी समय मिलता वह लेखन कार्य में बिताती। उसने अपने अनुभवों को डायरी के पन्नों पर अंकित करना प्रारंभ कर दिया।

तीन बरस बीत गए। उसने आत्मानुभवों को (काल्पनिक नाम से) आत्मकथा के रूप में प्रकाशित कराया जिसका पहला संस्करण हाथों-हाथ बिक गया। वह अनेक संस्थाओं के साथ जुड़ गई।

समाज में अब उसका अलग रूतबा था। एक दिन रीता उस आत्मकथा को पढ़कर उसकी लेखिका से मिलने आई। वह माधुरी को देख कर चौंक गई। उसने अपने परिवार की ट्रेजेडी के बारे में बताया कि उसके जाने के पश्चात् उसके माता-पिता यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाए और छह माह में वे दोनों चल बसे।

'परेश की दुर्घटना में मृत्यु हो गई। उस पर तो मानो दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। समाज के लोगों ने उसका जीना दूभर कर दिया। उस पर अनेक प्रकार के आक्षेप तथा लांछन लगाए गए। उसके दूर के चचेरे भाई ने उसे बेघर कर दिया। वह उसकी संपत्ति का मालिक बन बैठा।' वह अब एक प्राइवेट स्कूल में नौकरी करती है, जहां उन्होंने उसे सिर छिपाने को एक कमरा दे रखा है।

भाभी! तुम ही बताओ कि 'भगवान ने हम दोनों को ही मोहरा क्यों बनाया? आखिर हमारा दोष क्या था?' माधुरी ने रीता को साहसपूर्वक परिस्थितियों का सामना करने की सलाह दी और उसके सामने अपने यहां रहने का प्रस्ताव रखा। परन्तु रीता में तो उसकी नजरों का सामना करने का साहस नहीं था। उसने माधुरी को बताया कि 'वह अब जीना नहीं चाहती। वह टूट चुकी है। दुनिया वालों के व्यवहार को देखकर मेरा मन बहुत व्यथित है। मुझे यह जहान जीने के काबिल नहीं लगता।'

माधुरी ने उसे समझाया कि 'यह जीवन प्रभु प्रदत्त नेमत है तथा बहुत ही कठिनाई से मिलता है। सो! हमें अपने जीवन का अंत करने का अधिकार नहीं है। यह एक अनमोल तोहफा है जो हमें परमात्मा ने दिया है, इसलिए उसे अपने मन से यह भाव भी त्याग देना चाहिए।' माधुरी ने उससे अपने साथ रहने का वादा लिया और वे दोनों एकजुट होकर समाज सेवा के कार्यों में लग गईं जो मानव मात्र का सच्चा धर्म है।'

- डॉ. मुक्ता
निदेशक, हरियाणा ग्रंथ अकादमी,
फ्लैट नं. 30, शगुन सोसायटी, जिरकपुर (पंजाब)

लघुकथा

दहशत

ऐसे लग रहा था जैसे उसके पति का कोई पीछा कर रहा हो। तभी तो उसका पति किसी एक दुकान पर चैन से रूकता नहीं था। रंग-बिरंगी रोशनियों में चमकती दुकानों पर पत्नी बच्चे के लिए खिलौना तलाशती, भाव पूछती और इससे पहले कि दुकानदार के साथ मोल तय कर पाती कि पति महोदय अगली दुकान पर पहुंच चुके होते या भीड़ में खो चुके होते।

हर बार ऐसा ही हुआ। खिलौना हाथ में आते-आते रह गया, दुकानदार ने छीन लिया या बेबसी में वहीं रख देना पड़ा। राजधानी के हसीन बाजार में एक रंगीन शाम बिना कुछ खरीदे गुजर गयी। बाजार से वे ऐसे बचकर निकले जैसे किसी कसाई की छुरी के नीचे से शिकार बच निकले।

पत्नी ने पति से पूछा- आखिर, हम मुन्ने के लिए एक खिलौना खरीदने की हसरत दिल में ही लिए क्यों लौटे?

महंगाई हमारा बुरी तरह पीछा कर रही है। कहीं वह पूरी तरह हमें निगल न जाए, इसलिए मैं तुम्हें भगा लाया..।

पति ने हांफते हुए कहा और खाली हाथों में मुंह ढांप कर रोने लगा... किसी बच्चे की तरह, जिसे एक मुद्दत से मनपसंद खिलौना न मिला हो।

- कमलेश भारतीय
उपाध्यक्ष, हरियाणा ग्रंथ अकादमी
अकादमी भवन, पी-16, सैक्टर 14, पंचकुला

नव वर्ष 2012 की प्रफुल्लित किरणें तुम्हें मुबारिक

नव वर्ष दो हजार बारह की शुभ एवं प्रफुल्लित किरणों पर,
सूर्य नारायण सकल समाज एवं आप सबको यह पैगाम दें,
ईश्वर जीवन में खुशी के सब दिन और हंसी की हर शाम दें।
सकल समाज एवं देश में रहे शान्ति और सभी करे तरक्की,
रहे स्वस्थ संसार हमारा, सुख-समृद्धि हर चेहरे पर मुस्कान दे ॥1॥

नव वर्ष में सबको मिले आशीष जम्भेश्वर भगवान से,
नव वर्ष में आप सबको मिले विद्या माता सरस्वती से,
नव वर्ष की शुभ वेला पर घर दौलत की बौछार लक्ष्मी जी से,
नव वर्ष में सबको मिले स्वस्थ संसार भगवान धनवंत्री से,
नव वर्ष में सफलता कदम चुमती रहे, खुशियां संग घूमती रहे,
रहे स्वस्थ संसार हमारा, रहे सुख-समृद्धि हर चेहरे पर मुस्कान दे ॥2॥

घर में सबदवाणी का पाठ हो, गुरु कृपा से सब ठाठ हो,
करें धारण नियम उणतीस, गुरु जम्भेश्वर सदा साथ हो।
सब अपनों का मिले प्यार, मानवता की हर समय बात हो,
वन्य सम्पदा की करें रक्षा और माता लक्ष्मी की सौगात हो।
निरोगी रहे काया सबकी, नित संध्या आरती में ध्यान हो,
रहे स्वस्थ संसार हमारा, रहे सुख-समृद्धि हर चेहरे पर मुस्कान दे ॥3॥

नव वर्ष 2012 में प्यार के दीपक जलें और जगमगाते रहें,
नव वर्ष 2012 में हम आपको और आप हमें याद आते रहें।
नव वर्ष 2012 में सदा हर पल सफलता के संदेश आते रहें,
ईश्वर से करबद्ध यह दुआ है हमारी लम्बी आयु हो तुम्हारी,
ईश्वर की दया हो आप चांद की तरह हरदम जगमगाते रहें,
रहे स्वस्थ संसार हमारा, रहे सुख-समृद्धि हर चेहरे पर मुस्कान दे ॥4॥

रहे जीवन में छायी उमंग, रहे घर में खुशहाली आपके संग,
खुशियों में रहे हर त्यौहार-उत्सव और जीवन में रहे दबंग।
सुनहरी कलियां, फूल और फलियां, प्रकृति की हो उमंग,
गुरु के नियम और भारत माँ की सेवा के बन्धे रहे बन्धन।
सुदृढ़तम हो समाज और संगठन, श्री गुरु जम्भेश्वर का पूजन,
'श्रीमती और पृथ्वी सिंह' का आप सबको सदा सादर नवण प्रणाम।
रहे स्वस्थ संसार हमारा, रहे सुख-समृद्धि हर चेहरे पर मुस्कान दे ॥5॥

- श्रीमती ईमानती देवी व पृथ्वी सिंह बैनीवाल
189-एफ, सैक्टर 14, पंचकूला

विष्णु दशावतार वंदना

ॐ प्रथम मच्छ रूपेण
प्रविष्ठो जय सागरे वेद
मदाये जल येन देव शरणं ॥1॥

ॐ द्वितीयो कूर्म रूपेण
मन्दिर धार्यते गुरु समुद्र
मथ्यन्तै येन सो देव शरणं ॥2॥

ॐ तृतीये सुकर रूपम्
वाराह गरुड़ दानम पृथ्वी सो वृता
स्वामी सो देव शरणं ॥3॥

ॐ चतुर्थे नरसिंह रूपम
स्वरूपम् विक्टात्रम
हिरणकुश्पु हनम सो देव शरणं ॥4॥

ॐ पंचमो वामन रूपम ब्राह्मणो वेद पारंग
पातालस्य बली बृद्धो सो देव शरणं ॥5॥

ॐ षष्ट में जमदिग्न सुतो
फरसरामो महाबली
सहस्त्रार्जुन हन्तो येन
सो देव शरणं ॥6॥

ॐ सप्तमे दशरथी पुत्रो रामो नाम धनुष
धार्य रावणं हनन्तो येन देव शरणं ॥7॥

ॐ अष्टमो देवकी पुत्रो वासुदेवो
चतुर्भुजकशासंर हनन्तो
येन सो देव शरणं ॥8॥

ॐ नवमे बुद्ध रूपेण योग
ध्यानं च वस्तुतीजगल्सं पूज्यमं
ते योगी सो देव शरणं ॥9॥

ॐ दशमे कलियुग सात कल्कि विष्णु
भवशशि मछले छेदानार्थं
येन सो देव शरणं ॥10॥

ॐ हंसा सुताय विह्महे लोहट पुत्राय
धिमहि तन्नो जम्भः प्रचोदयात्॥
एताती दशं नमामि प्रातरूस्थाय पठेत तस्य
रोगक्षर्यात गृहे लक्ष्मी प्रवर्तते॥

- पांचाराम
गांव धनाणियो की ढाणी, भीयांसर,
त. फलोदी, जिला जोधपुर

बधाई सन्देश

श्री जगरूप गोदारा पुत्र स्व. श्री सूरजमल गोदारा, निवासी 1660, अर्बन एस्टेट, हिसार (गांव खैरमपुर), का चयन माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ाई के लिए किया गया है। इससे पहले वे 16 हजार फुट वाली चोटी सीताधार पर तिरंगा लहरा चुके हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री सुनील कुमार भांभू सुपुत्र श्री हेतराम भाम्भू, निवासी गांव हरदयालपुरा, तह. पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़ का राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा व्याख्याता (इतिहास) पद पर चयन एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, ख्यालीवाला, श्रीगंगानगर में पद पर स्थापन हुआ है। आपकी उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

डॉ. गौरव बिश्नोई सुपुत्र श्री अशोक कुमार बिश्नोई (ईशरवाल), डी.एस.पी. निवासी गांव सारंगपुर, तह. व जिला हिसार ने बी.डी.एस. की डिग्री लेने के उपरान्त हिसार शहर में डा. गौरव दांतों का हस्पताल का शुभारंभ किया है। डॉ. गौरव अमर ज्योति के प्रथम संपादक स्व. सहीराम जौहर के दोहते हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री शिवराज बिश्नोई भादू सुपुत्र श्री हनुमान राम भादू, निवासी गांव नोखा, जिला बीकानेर ने एम.बी.बी.एस. की परीक्षा चीन से अक्तूबर 2011 में उत्तीर्ण की तथा मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित एफ.एम.जी.आई. की परीक्षा में चयन हुआ है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

डॉ. सुरेन्द्र बिश्नोई भादू सुपुत्र श्री हनुमान राम भादू, निवासी गांव नोखा, जिला बीकानेर ने आयुर्वेद मेडिकल विश्वविद्यालय, जोधपुर से नवंबर 2011 में एम.बी.बी.एस. की उपाधि मैरिट से प्राप्त की है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री सुशील पूनिया सुपुत्र श्री रामचन्द्र पूनिया, निवासी गांव हरिपुरा, तह. अबोहर, जिला फाजिल्का (पंजाब) की मुफ्त एंबुलेंस सेवा के लिए एमरजैंसी मेडिकल टेक्निशियन (**EMT**) के पद पर नियुक्ति हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री सुनील गोदारा सुपुत्र श्री ओमप्रकाश गोदारा, निवासी गांव 5एल.सी., तह. रायसिंह नगर, जिला श्रीगंगानगर ने जून 2011 में यू.जी.सी. द्वारा आयोजित नेट जे.आर.एफ. (संस्कृत) की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

डॉ. हेतराम वरिष्ठ वैज्ञानिक (रि., एच.ए.यू.) निवासी गांव असरांवा, ने हरियाणा मास्टर खेलकूद प्रतियोगिता जो 19-20 नवंबर 2011 को पंचकुला में हुई, 100 मीटर दौड़ 65 वर्ष आयु वर्ग में दूसरा स्थान प्राप्त किया तथा नेशनल प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है, जो फरवरी 2012 में बेंगलोर में होगी। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री रमन बिश्नोई सुपुत्र श्री रिपूदमन सिगड़, निवासी गांव मेहराणा धोरा, तह. अबोहर, जिला फाजिल्का (पंजाब) का चयन एन.सी.ए. (क्रिकेट) में हुआ है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री दुष्यंत जौहर सुपुत्र श्री जगदीश चंद्र जौहर, निवासी गांव मंगाली सुरतीया हाल जगाधरी (यमुनानगर) ने राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान खोज परीक्षा 2011 में 18-19 नवंबर को पुष्पा गुजराल साईंस सिटी कपूरथला में आयोजित प्रतियोगिता में कांग्रेस घास के उन्मूलन पर अपना रिसर्च शोध प्रस्तुत किया। जिसके लिए प्रथम पुरस्कार मिला। शोध जारी रखने के लिए तथा उसे जर्मनी में आयोजित होने वाली अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भेजने के लिए 25,000 रुपये अनुदान राशि भी दी गई। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री दीक्षान्त जौहर सुपुत्र श्री जगदीश चन्द्र जौहर, निवासी गांव मंगाली सुरतीया हाल जगाधरी (यमुनानगर) ने यमुनानगर में जिला स्तरीय तथा रोहतक में राज्य स्तरीय राष्ट्रीय विज्ञान खोज परीक्षा 2011 में हिस्सा लेते हुए दीक्षांत की टीम ने जूनियर वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। टीम जयपुर में होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 27 तथा 28 दिसंबर 2011 को भाग लेगी। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

इन्दौर के अंतर्राष्ट्रीय महान भारत केसरी एवं विक्रम अवार्डी पहलवान रोहित पटेल बिश्नोई ने पिछले दिनों महाराष्ट्र के वारणा में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय दंगल में रूस के तैमुराझ तिगीटह को पराजित किया। रोहित ने 9.30 मिनट में तिगीटह को किलच दांव लगाकर आसमान दिखाया। तात्या साहेब कारे कि स्मृति में होने वाले इस दंगल में वारणा साखर केसरी एवं लाखों रुपये की इनामी राशि दांव पर होती है।

MATRIMONIALS

Name : Virat Bishnoi
Age : 27 Years
Height : 6'-4"

Personality : Fair colour, Very handsome and outstanding

Qualification :
- 10+2 (Non-Medical), India
- Graduation in Engineering (Electronics) from Clemson University, America
- M.B.A. in Finance from California University, America (University Topper)

Present work : As Software Engineer
Mother : Smt. Chanderkala Bishnoi
Associate Professor
Father : Dr. Gurdyal Singh Bishnoi
Principal (Govt. College)
Grand Father : Ch. Bhajan Lal Bhadu
Jhalania, Fatehabad
Address : 155, Sector 15-A, Hisar (Haryana)
Contact No. : 09896089554

REQUIRES A BRIDE (with following qualities)

Height : 5'-8" or above
Should be very beautiful and well qualified.
No Dowery, No demand.

आइए अपनी पहचान बनाएं : 10

"बिश्नोई क्या होते हैं?" परिचय देते समय प्राय: पूछा जाने वाला यही प्रश्न 'आइए अपनी पहचान बनाएं' लेख शृंखला के सृजन की प्रेरणा एवं स्रोत बना। इस लेख शृंखला का उद्देश्य बिश्नोइज्म को पहचान संकट से उबारना है। इस दिशा में किया गया यह एक प्राथमिक तथा अति सूक्ष्म प्रयास है। जनवरी, 2011 तक आरम्भ हुई इस लेख शृंखला को दिसंबर 2011 में बारह लेखों के साथ सम्पन्न करने की आरम्भिक योजना थी। किन्तु अपरिहार्य कारणों से इस वर्ष अमर ज्योति के ग्यारह अंक प्रकाशित हो पाए जिनमें से एक आकर्षक विशेषांक था। नवंबर, 2011 में प्रेषण विलंब के कारण लेख प्रकाशित नहीं हो पाया। इस कारण मैं इस लेख शृंखला को जनवरी, 2012 में दस लेखों के साथ सम्पन्न कर रही हूं। स्वयं बिश्नोई होने के उपरांत भी प्रारम्भ में बिश्नोइज्म के विषय में मेरा ज्ञान किसी भी प्रकार से बिश्नोइज्म पर लेख लिखने के लिए पर्याप्त नहीं था। मेरा प्राथमिक उद्देश्य उन सभी कारणों को ज्ञात करना था जिनके कारण असंख्य आत्मबलिदानों तथा धार्मिक, अध्यात्मिक तथा व्यवहारिक विशिष्टताओं के उपरांत भी अज्ञात है। अज्ञातता अस्तित्वहीनता के समान है। निश्चित रूप से मेरे आयु वर्ग के लिए यह एक अत्यंत ही वृहद्, विस्तृत तथा दुष्कर प्रतीत होने वाला कार्य था। इसका प्रारम्भ मैंने कागज पर एक विस्तृत योजना बनाकर किया। योजना के प्रथम चरण में मैंने विभिन्न स्रोतों तथा स्थानों से बिश्नोई साहित्य इकट्ठा करना तथा उसका अध्ययन करना आरम्भ किया। साहित्य सीखाता है। अमर ज्योति की सदस्यता लेना इसी क्रम का एक भाग रहा जिससे मैं बिश्नोइज्म की समकालीन सामाजिक, धार्मिक तथा वैचारिक स्थिति को समझ पाई (तथापि अभी भी बहुत कुछ समझना शेष है)। वर्तमान को समझना आवश्यक है क्योंकि जीवन वर्तमान में है। साहित्यिक अध्ययन, बिश्नोई धर्म स्थलों की यात्राओं तथा देश के विविध क्षेत्रों में निवास करने वाले बिश्नोइयों से सम्पर्क साधकर व उनसे बिश्नोइज्म पर विचारोत्तेजक चर्चाएं करके मैं आधारभूत खामियां समझ पाई। अन्य धर्मों के विद्वानों से चर्चा करना भी अत्यंत ही फलदायी रहा तथा ना केवल इससे मेरी वैचारिक सीमाएं विस्तृत हुई बल्कि मैं स्वधर्म का भी साक्षात्कार कर पाई। इसी क्रम में उत्पन्न हुए विचारों को लेखों में ढाल कर शृंखला के रूप में अमर ज्योति के पवित्र माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया। लिखे हुए शब्द ही इतिहास बनते हैं।

प्रारम्भ में इस लेख शृंखला को मैं सफलतापूर्वक सम्पन्न कर पाने के बारे में संदेह में थी। दूसरे शब्दों में मुझे अपनी असफलता का पूर्ण विश्वास था। ऐसा इसलिए क्योंकि मैं जानती थी कि लेखन एक अत्यंत ही गंभीर क्षेत्र है तथा यह समर्पण की मांग करता है। यही नहीं इसमें निरंतरता बनाए रखना और अधिक समर्पित परिश्रम की मांग करता है। किन्तु निरंतरता ही विश्वसनीयता को स्थापित करती है, ऐसा मैं जानती थी। निरंतरता बनाए रखने के इसी दबाव ने मुझे कई अवसरों पर चिड़चिड़ा तथा तीव्र प्रतिक्रियावादी भी बना दिया। उस समय में मुझे सहन करने के लिए मैं अपने परिवार का हृदय से धन्यवाद करती हूं।

क्या एक अर्थशास्त्र की छात्रा धर्म जैसे अत्यंत गंभीर एवं संवेदनशील विषय पर कुछ सार्थक लिख पाएगी? सार्थक होना लेखन की प्रथम शर्त है। क्या मुझमें इतनी परिपक्वता है कि मैं अपने लेखन करियर का आरम्भ बिश्नोइज्म से करूं? क्या मेरा ज्ञान उस स्तर का है कि पाठक मेरे लेखन को गंभीरता से लें? क्या भाषा पर मेरा अधिकार पर्याप्त रूप से शक्तिशाली है कि मेरे मस्तिष्क में उत्पन्न विचारों को मैं शब्दों में ढालकर पाठकों तक पहुंचा सकूं। ऐसे अनेकानेक विकट प्रश्न मेरे सम्मुख प्रकट हुए। चिंतन तथा लेखन में विद्यमान आधारभूत अंतर मुझे समझना था। परिश्रम से विशेषज्ञता आती है, मैंने सीखा।

आज दिवाली की रात को इस शृंखला का अंतिम लेख लिखते हुए मैं आत्मसंतुष्टि का अनुभव कर रही हूं। इस शृंखला का लिखा जाना मेरे लिए आत्म साक्षात्कार की तरह रहा। मुझे लगता है कि अब मैं अपनी जड़ों को एवं अपने आपको अधिक बेहतर जानती हूं। यही मेरे लिए इस सब परिश्रम का सबसे बड़ा पुरस्कार है। अब मैं अधिक आत्मविश्वास से भरी व परिपक्व अनुभव करती हूं।

बिश्नोइज्म को अज्ञानता से उबारने के लिए इस लेख शृंखला के माध्यम से मैंने कुछ निश्चित, सुसाध्य, समसामयिक एवं व्यवहारिक विचार/सुझाव देने का प्रयत्न किया है। मैंने अपने विचारों व सुझावों की व्यवहारिकता को सर्वोपरि रखने का प्रयास सम्पूर्ण शृंखला में किया है। व्यवहारिकता जीवन है।

मेरा मत है कि ये सभी सुझाव पर्याप्त रूप से प्रभावोत्पादक है तथा यदि ये सब हम सबके सामूहिक प्रयत्नों के द्वारा साकार रूप ले लें तो मैं आपको आश्वसत कर सकती हूं कि समस्त विश्व हमें जानेगा, हमारा सम्मान करेगा तथा हमें गम्भीरता से लेगा। पहचान प्राथमिकता है। बिश्नोइज्म को सक्रिय नेतृत्व की तुरंत आवश्यकता है। कार्यों को सम्पन्न करने के प्रति हमारी अनिच्छा ही हमारी वास्तविक शत्रु है। मेरे मस्तिष्क को इन सभी विचारों से भरने तथा उन्हें कागज पर उतारने की शक्ति देने के लिए मैं भगवान श्री गुरु जम्भेश्वर को कोटि-कोटि प्रणाम करती हूं। प्रणाम इसलिए भी कि मेरा जन्म एक बिश्नोई के रूप में हुआ है। मेरे घर में उगी पवित्र कंकेड़ी वृद्धि-विकास को प्राप्त है और मैं भी। उनके कष्टप्रद व निष्काम प्रयत्नों तथा इस लेख शृंखला में गहन रूचि लेने के कारण मैं धन्यवाद करती हूं। सम्पादक, अमर ज्योति का जिनके अथक प्रयासों से यह शृंखला निर्विघ्न प्रकाशित हो पाई। समस्त अमर ज्योति प्रबंधन भी इस हेतु धन्यवाद का पात्र है। मैं उन सभी का हृदय से धन्यवाद करती हूं जिन्होंने इस लेख शृंखला को पढ़ा तथा धन्यवाद उनको भी जिन्होंने रचनात्मक प्रतिक्रियाएं भी संप्रेषित की। अनुभवहीन होने के कारण मैं जानती हूं कि मैंने लेखन में बहुत सारी त्रुटियां की हैं किंतु आप सभी ने बड़प्पन दिखाते हुए उनको नजरअंदाज कर दिया। इसके लिए भी आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं। उम्र जाती है अनुभव आता है।

इस लेख शृंखला के माध्यम से मैं कितनी सफलतापूर्वक अपने विचार आप तक पहुंचा पाई हूं। यह मैं जानती हूं आप सब स्वयं तय करेंगे। यह आत्ममुग्ध होने का समय कदापि नहीं है। आत्ममुग्धता प्रतिभा की प्राकृतिक शत्रु है तथा मुझे इससे बचना होगा। यह लेख शृंखला एक लम्बी साहित्यिक यात्रा की एक शुरूआत मात्र है। अब जबकि मेरे विचार एवं सुझाव आपके समक्ष हैं, यह सही समय है सही दिशा में सामूहिक प्रयत्न एवं परिश्रम से अज्ञानता के स्याह पर्दों को उठाने का तथा पहचान की नई रोशनी के स्वागत करने का।

अंत में मैं श्रेय देती हूं 'आइए अपनी पहचान बनाएं' लेख शृंखला का भगवान श्री गुरु जम्भेश्वर को एवं इस शृंखला को समर्पित करती हूं उस महान बिश्नोई समाज को जो मेरे आत्मगर्व का अनंत स्रोत है। भगवान श्री गुरु जम्भेश्वर का आशीर्वाद हम सभी पर बना रहे।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित।

संतोष पूनियां
II-B, वंदना अपार्टमेंट, सदाबहार चौक, नामकोम,
रांची, झारखण्ड मो. : 07870392017

नि:संदेह लेखिका की इस लेख शृंखला ने एक नए विमर्श को जन्म दिया है। अपने सारगर्भित लेखों के माध्यम से अनेक बहुमूल्य सुझाव देकर हमारे पाठकों का मार्गदर्शन किया, इसके लिए लेखिका धन्यवाद की पात्रा है। लेखिका एवं अमर ज्योति का श्रम तभी सार्थक होगा जब पाठक इस शृंखला से प्रेरणा लेकर कुछ रचनात्मक कार्य करेंगे। यदि कोई अन्य लेखक भी ऐसी समाजोपयोगी, वैचारिक, शोधपरक व प्रेरणास्पद लेख शृंखला लिखना चाहे तो उनका सदैव स्वागत होगा। **- सम्पादक**

व्यर्थ चिंतन व परचिंतन को समाप्त कर जीवन सुखी बनाएं

जम्भवाणी के शब्द 13 के अनुसार- **'अहनिश आव घटती जावै। तेरा श्वास सभी कसवारूं'** अर्थात् हे मानव दिन प्रतिदिन आयु क्षीण होती जा रही है विष्णु भजन के बिना तेरे श्वास व्यर्थ जा रहे हैं। आज बिश्नोई समाज को गुरु जम्भेश्वर भगवान के नियमों व शब्दों को अपने जीवन में उतारने अर्थात् धारण करने की जरूरत है। केवल शब्दों को हवन पर बैठकर पढ़ने से आत्मिक शांति नहीं मिल सकती, सच्ची शांति तभी मिलेगी जब आप उनको अपने जीवन में धारण करेंगे। आज के युग में हर इंसान अशांत है, चाहे वह धनी ही क्यों न हो। कभी आपने सोचा है कि इस अशांति का प्रमुख कारण क्या है? उत्तर है- 'व्यर्थ चिंतन व परचिंतन' जी हां यदि आप इसे समाप्त कर दें तो जीवन सुखी बन सकता है। व्यर्थ चिंतन जैसे- बीती बातों, बीती घटनाओं, बुरी परिस्थितियों व निंदा आलोचना की अमिट छाप मानव अपने हृदय पर लगा लेता है जो सबसे ज्यादा स्वयं का ही मानसिक व शारीरिक हानि करती है। अपने भूतकाल को दोहरा-दोहरा कर अपने वर्तमान को भी चिंतामय व दुखी कर लेते हैं जबकि हर इंसान को मालूम है कि भूतकाल को दोहराने से कुछ बदलने वाला नहीं। व्यर्थ बातों पर विचार करने से व्यक्ति की असंतुष्टता और बढ़ जाती है। असंतुष्टता व्यक्ति को खोखला कर देती है जैसे- लकड़ी को दीमक। खोखला व्यक्ति बाहर से अच्छा दिखाई देता है परन्तु अंदर से बिल्कुल टूटा हुआ, जिसमें आत्मिक बल बिल्कुल नहीं होता। परिस्थितियों से अधिक, गलत व व्यर्थ सोच से अपने आत्मबल व मनोबल को क्षीण कर लेता है।

गलत व व्यर्थ सोच मानव मन में विकार पैदा करती है और धीरे-धीरे उसे विकारी बना देती है जैसे- ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, तुलना, क्रोध, अहंकार इत्यादि विकार व अवगुण न चाहते हुए भी आ जाते हैं। अत: व्यर्थ सोच से बचें। भूतकाल को स्वीकार करें, जो भी घट रहा है उसका कारण आपका बोया बीज है, जो भोगने से ही कटेगा, खुशी से ही झेलने में समझदारी है ताकि वर्तमान तो खराब न हो। संसार रूपी वाटिका से फूल चुनने की बजाय कांटे चुन-चुन कर अपने हृदय को घायल करना समझदारी नहीं है। एक कांटे की चुभन मिटती नहीं कि दूसरी चुभन याद कर सीने में लगा लेते हैं। बार-बार हृदय को चुभन देने से मानसिक व शारीरिक रूप से बिमारी के रूप में जकड़ लेगी। भूतकाल को भूत समझें क्योंकि इनसे भूत जैसी स्थिति बन जाती है। बीती को बिंदी यानि Full Stop लगा दें। वर्तमान में जीना सीखें। वर्तमान से ही भविष्य बनेगा।

दूसरा है परचिंतन जो चने की घुण की तरह अंदर से खोखला करता है। लोगों की बुराइयों पर ध्यान देने की बजाय उनकी अच्छाइयों पर ध्यान दें। जैसे हंस केवल मोती ही चुगता है। दूसरों की तरफ उंगली करके वर्तमान की खुशी न गंवाएं। दूसरों को सुधारने की बजाय स्वयं को सुधारने व बदलने की कोशिश करें। अपने को कर्मयोगी बनाएं। ऐसा कार्य करना जिससे स्वयं को शांति व खुशी मिले। गरीब, दु:खी व बेसहारा इंसानों की दुआएं लीजिए जो नि:स्वार्थ सेवा से संभव है और नि:स्वार्थ सेवा का बल प्रभु में मन व ध्यान लगाकर लिया जा सकता है। यह सब करने से यहां भी सुख शांति मिलेगी व भविष्य भी सुधरेगा। अत: सार यही है कि व्यर्थ चिंतन व परचिंतन में मन लगाने की बजाय प्रभु का चिंतन करें व दु:खी व जरूरतमंद इंसानों के कल्याण में लगाएं जिससे स्वयं को सच्चा सुख व शांति मिलेगी और इसी से भूतकाल के पापकर्म भस्म होंगे। वर्तमान सुधरने से भविष्य स्वत: सुधर जाएगा।

- प्रोफसर चन्द्रकला बिश्नोई
एफ.सी. कालेज, हिसार (हरियाणा)

क्या आप ऐसा कर सकते हैं?

कुछ चीजें ऐसी हैं जो जीने के लिए बहुत आवश्यक हैं, उनके अभाव में जिन्दा रहना कठिन है। परन्तु कुछ चीजें ऐसी हैं, जिनके न होने से शायद हम सृष्टि की कल्पना भी नहीं कर सकते। हवा पानी के न होने से शायद हम सृष्टि की कल्पना नहीं कर सकते, परन्तु जब मनुष्य की जिंदगी से प्रेम, सद्भावना विश्वास या यूं कहिए कि नैतिकता निकल जाती है तब उसकी स्थिति ऐसे पक्षी की भांति होती है जिसके पंख काट दिए गए हों, यदि आप ऐसे पक्षी की कल्पना कर सकते हो तो स्वयं की तुलना उससे करो, क्या आप अपने चारों तरफ देख सकते हो, जहां हर घर, हर कदम, हर मोड़ पर मानव विचारों का टकराव हो रहा है, हम अविश्वास की गर्म हवाओं से झुलस रहे हैं। मानवता, इंसानियत क्यों हमारे बीच नहीं रही? क्यों हम स्वार्थी हो गए? हम उस धर्म से जुड़े हुए हैं जिसमें पेड़ों और पक्षियों तक कि भावनाओं की कद्र करते हैं, उनके बारे में सोचते हैं, लेकिन आज का बिश्नोई बिल्कुल अलग है, आज हम मेहनत से घबराते हैं।

संघर्ष हमें कड़वा लगता है। शायद हमें फूलों की आदत हो गई है। पर क्या आप जानते हैं गर्म हवाओं में गुलाब नहीं नागफनी के फूल खिलते हैं। पल-पल हम अपने धर्म के नियमों को एक तरफ रख देते हैं, झूठ बोलते हैं, बुराई का हिस्सा, दिल नहीं रोकता। एक पल में हम आसमान छूना चाहते हैं, इसलिए शायद गिर जाते हैं। क्या बिश्नोई समाज के आचार-विचार पाखंड हैं? नहीं, अगर एक सच्चा बिश्नोई बनना है तो सबसे पहले अपने धर्म और नियमों का आदर करना सीखो, बिश्नोई बने रहने पर न तो आपकी आर्थिक स्थिति पर आंच आती है और न ही सामाजिक स्थिति पर। आज बिश्नोई समाज में वो बात नहीं है जो बरसों पहले थी। आज हम अपनी पहचान खोते जा रहे हैं। शायद इसलिए कि स्वयं को अभिव्यक्त करने और वैज्ञानिक तर्क देने में अयोग्य है, इसलिए हीन भावना से ग्रस्त है।

आज हम पश्चिमी सभ्यता के पीछे भाग रहे हैं। इस भौतिकवाद की दौड़ में माता-पिता, अग्रज आदि सही मार्गदर्शन नहीं कर पाते या नई पीढ़ी बड़ों को पिछड़ा समझ कर उनसे ज्ञान लेना नहीं चाहती। कारण कुछ भी हो सही प्रचार, दिग्दर्शन के अभाव में ही बिश्नोई सम्प्रदाय, अन्य धर्मों की तरह प्रसिद्धि नहीं पा सका। मैं अपना अनुभव आप सब लोगों के साथ सांझा करना चाहती हूं। मैं नाम नहीं लूंगी लेकिन एक लड़की जो अपने नाम के पीछे बिश्नोई लिखती है, गले में 'गुरुजी' का ताबीज डालती है लेकिन जब मैंने पूछा कि बिश्नोई धर्म का पहला नियम क्या है, गुरु महाराज का जन्म कहां हुआ था, उनके माता-पिता कौन थे, उसने बड़े सहज भाव से कह दिया कि 'मुझे नहीं पता'। ये सब बातें क्या अभिव्यक्त करती हैं? धर्म में आस्था का मतलब ये नहीं कि आप छल्ला, ताबीज आदि डालें बल्कि अपने धर्म का आदर करें, उसके बारे में जानें।

मैंने ये सब बातें इसलिए लिखी हैं क्योंकि कई बिश्नोई भाई अपने आपको बिश्नोई कहते, लिखते, बतलाते हैं परन्तु बिश्नोई धर्म का सामान्य ज्ञान व परिचय भी नहीं जानते। वास्तव में बिश्नोई धर्म एक श्रेष्ठ एवं वेदोक्त धर्म है। वेदों में जो व्याख्या महर्षि दयानन्द जी ने 19वीं शताब्दी में की, ईश्वर जीव-प्रकृति का जो संबंध दर्शाया, वह सब गुरु जाम्भोजी ने 15वीं शताब्दी में ही बता दिया था। स्वामी दयानन्द ने बिश्नोई धर्म के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को शुरूआत से ही नैतिकता का पाठ पढ़ाएं और एक सच्चा बिश्नोई बनने को प्रेरित करें क्योंकि एक सच्चा बिश्नोई कभी भी किसी चीज में पीछे नहीं रह सकता।

– **अन्जना बिश्नोई**
चिकनवास (हिसार)

नि:स्वार्थ और निष्काम भाव से ही हो ईश्वर की उपासना

मानव जाति का जब से उद्‌भव हुआ है तथा जब से उसने अपने आपको सभ्य समाज के स्वरूप में परिवर्तित किया है, तभी से वह इस संसार में ईश्वर की शक्ति को किसी न किसी स्वरूप में मानता आ रहा है। इसी ईश्वर की शक्ति को उसने धर्म के नाम से परिभाषित करके उसमें अपना अटूट विश्वास बनाए रखा है। आज संसार में अलग-अलग धर्म और उनकी व्यवस्थाओं को माना जाता है। भारत में भी अनेक धर्म हैं। जिसमें सबसे ज्यादा हिन्दू धर्म के लोगों की संख्या है और हिन्दू धर्म में भी अलग-अलग धार्मिक सम्प्रदाय बने हुए हैं, जो कि अपनी मान्यताओं के अनुसार ईश्वर की उपासना करते हैं। टेलिविजन मिडिया के युग में, हम आज देखते है कि बहुत सारे चैनलों पर धर्म गुरुओं की एक बाढ़ सी आई हुई है। वे अपने-अपने अनुभव से लोगों को ईश्वर या भगवान प्राप्ति के रास्ते दिखलाने का प्रयास करते हैं। इन सन्तों की सभाओं में लोगों की भीड़ भी खूब जुटती है, इसी प्रकार लोग मन्दिरों व अन्य धार्मिक स्थलों पर आते जाते हैं तथा भगवान के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हैं। यहां पर प्रश्न यह उठता हैं कि जितना दिखावा हो रहा है या किया जा रहा है, वह कितना सही है तथा हमारी आस्था ईश्वर के प्रति कितनी सुदृढ़ है। देखने से ऐसा लगता है कि लोगों का जन समूह बहुत ही तन्मय और श्रद्धा से देवी-देवताओं की उपासना करते हैं।

इसी प्रकार लाखों लोग गंगा जैसी नदियों में नित्य ही स्नान करके अपने पाप धोने की चेष्टा करते हैं, कहीं पर गायत्री मंत्र का जाप किया जाता है, तो कहीं पर गीता के श्लोकों से आत्म शुद्धि होती है। सन्त महात्मा भी अपने पण्डालों में धर्म और ईश्वर की भक्ति के प्रति खूब प्रवचन करते हैं। इतना सब होते हुए भी मालूम होता है कि मानव जाति परम पिता परमात्मा की कृपा पाने के लिए ना जाने कितनी ही व्याकुल दिखती है, लेकिन ज्यादातर लोगों का हृदय टटोलकर देखा जाए तो, यही प्रतीत होगा की उनके इन धार्मिक कृत्यों के पीछे अन्त:स्थल में कोई न कोई लालच या कामना छिपी रहती है। प्राय: लोगों का यह कथन होता है कि हम भगवान की इतनी पूजा-अर्चना करते हैं फिर भी हमें लाभ क्यों नहीं होता तथा हृदय में शान्ति का अनुभव क्यों नहीं है, लेकिन प्रश्न फिर वही है कि क्या वे निष्काम, नि:स्वार्थ भाव से भगवान को चाहते हैं? जिस कामना को हम अपने हृदय में छिपाकर उपासना करते हैं यदि वह इच्छा हमारी पूर्ण हो गई तो सम्भवत: हम फिर परमात्मा का स्मरण भी नहीं करेंगे। यदि हमें विश्व का ऐश्वर्य और वैभव भोगने के लिए मिल जाए तो, हम भोग-विलास में ही डूबे रहेंगे। जब ऐसी स्थिति हो तो, हमें भगवान के दर्शन कैसे मिल सकते हैं। इस संबंध में एक बड़ा ही सुन्दर दृष्टांत भगवान विष्णु तथा नारद मुनि के बीच का इस प्रकार है:-

एक बार एक कीर्तन-मंडप में बड़े जोरों से भगवान के नाम का कीर्तन हो रहा था। लोग इतने तन्मय हो रहे थे, कि उन्हें यदि बाह्य ज्ञान शून्य कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। किसी-किसी के नयनों से प्रेमाश्रु बह रहे थे। कोई-कोई नाच-नाचकर नामोच्चारण कर रहे थे। कोई रूदन कर रहा था, कोई कह रहा था 'हे भगवान् तुम्हारे दर्शन कब होगें'? मालूम होता था कि, यह जो हजारों की संख्या में भक्त-मंडली इकट्‌ठी है, ये सब के सब, परमात्मा को पाने के लिए बेचैन हैं। जैसे भगवान के दर्शन के बिना, इनका एक-एक पल भारी हो रहा है।

संयोगवश नारद मुनि उधर से ही जा रहे थे। उन्होंने जब भक्तों की ऐसी कारुणिक दशा देखी, तो उनको बड़ी दया आई और मन ही मन में सोचा कि भगवान भी कितने निष्ठुर हैं, कि अपने दर्शन के लिए उन्मतप्राय इस बड़ी भारी भक्तों की मंडली को दर्शन देने के लिए प्रकट नहीं हो रहे हैं। ऐसा सोचते हुए वे बड़ी शीघ्रता से विष्णुलोक को गए और विष्णु भगवान के समीप पहुँच गये। नारद मुनि ने भगवान से कहा कि भगवान आपको कृपानिधान, दयासागर, करुणा सिंधु वृथा ही कहते हैं।

अमुक स्थान पर इतने भक्त आपके दर्शन के लिए व्याकुल हैं और आप उन्हें दर्शन नहीं देते हैं।

भगवान तो अन्तर्यामी थे ही। उन्होंने देखा कि मेरे परम भक्त नारद को कुछ भ्रम हो गया है, उसको मिटाना चाहिए। ऐसा समझकर भगवान ने नारद मुनि से कहा कि 'कोई हर्ज नहीं, जब तुम कह रहे हो, तो हम उन भक्तों को जरूर दर्शन देगें'। ऐसा कहकर वे नारद ऋषि के साथ उस गाँव की ओर चले, जहाँ पर लोग हरिकीर्तन में लगे थे। उस गाँव से पांच कोस दूर वट वृक्ष की सुरक्षित छाया में भगवान विराजमान हो गए और नारद मुनि से कहा कि देखो हम तो इतनी दूर से चले आए हैं, इसलिए इस सुन्दर स्थान पर विश्राम करते हैं। तुम अपनी भक्त-मंडली को यहीं पर ले आओ तो हम उनको अवश्य दर्शन देंगे। जब हम हजारों कोस चलकर आए हैं, तो क्या हमारे दर्शनाभिलाषी वे भक्त पांच कोस भी नही चल कर आएंगे। अतएव तुम जाओ और उनको ले आओ।' नारद मुनि ने कहा- भगवान बिल्कुल ठीक है, मैं कुछ ही समय में आपके चरणों में कई हजार भक्तों की भीड़ लाकर इकट्ठा कर देता हूँ।

ऐसा कहकर नारद मुनि अति प्रफुल्लित होकर उस कीर्तन-मंडप में पहुँचे और कीर्तनरत उन भक्तों से कहा कि- 'देखो मैं नारद मुनि हूँ। तुम लोगों को भगवान के दर्शन के लिए इतना विकल देखकर, विष्णुलोक से भगवान को ले आया हूँ, जो कि यहाँ से पाँच कोस की दूरी पर वट वृक्ष के नीचे विराजमान हैं। सत्य मानो, मैं ही नारद मुनि हूँ। ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता। शीघ्र चलो। इस तरह उन्होंने बहुतेरा समझाया लेकिन वे भक्त टस से मस नहीं हुए। बल्कि वे विश्वास ही नहीं कर पा रहे थे कि ये सच कह रहे हैं। किसी ने तो कहा- नारद मुनि ने अच्छा स्वांग रचा हैं किसी ने कहा- ऐरा-गैरा-नत्थूखैरा सब कोई भगवान के दर्शन दिलाने के ठेकेदार हो गये हैं। किसी ने कहा आजकल ठग विद्या के भी कई तरीके चालू हो गए हैं। लेकिन नारद ऋषि ने फिर सबको समझाया। काफी समझाने के बाद लोगों के ध्यान में आया कि चलो, अपना क्या लेता है, पांच कोस ही तो जाना है। दर्शन होगा तो अच्छा ही है, नहीं तो कुछ घुमना हो जाएगा। फिर यह साधु भी तेजस्वी दिखाई देता है। तीन चौथाई व्यक्ति तो मुनिराज के साथ चल पड़े, शेष वहीं पर रह गए, जिनके मन में भगवान दर्शन की लालसा थी ही नहीं।

इधर भगवान ने अपनी योगमाया को बुलाया और कहा कि अपनी माया का जाल रचो और परीक्षा लो कि ये भक्त जो मुनि के साथ आ रहे हैं, वे सचमुच ही मेरे दर्शनाभिलाषी हैं या केवल धन, स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति, मान बड़ाई, वैभव इत्यादि के लिए मेरी उपासना करते हैं। योगमाया ने आज्ञा पाकर अपना जाल बिछाया।

भक्तों के साथ जब नारद मुनि प्रथम कोस पार कर चुके तो वहाँ पर जमीन विभक्त हो गई थी और ताम्र के सिक्कों की खान दृष्टिगोचर होने लगी। अब लोग जो 'हरे राम, 'हरे राम' कीर्तन कर रहे थे, वे 'अरे दाम' 'अरे दाम' रटने लगे और उस खान पर सिक्के बटोरने के लिए टूट पड़े। अब मुनि ने उन लोगों को समझाया कि अरे तुम यह क्या कर रहे हो, यह सब माया है। इसके चक्कर में न फंसो, यह सब असत्य है। चलकर भगवान के दर्शन करो। इस तरह के वचन सुनकर आए हुए भक्तों में से आधे से ज्यादा तो हाथ झाड़कर खड़े हो गए और मुनि से कहा कि महाराज सांसारिकों के कष्टों को आप क्या जाने? आप जैसे साधु को तो कुछ भी नहीं चाहिए। भगवान के दर्शनों में क्या रखा हैं, इन पैसों से हमारा बहुत काम होगा, हमारे दु:खों का अन्त हो जाएगा, इत्यादि।

अब जो शेष बचे थे , उनको लेकर नारद मुनि आगे बढ़े। जैसे ही दूसरा कोस पार कर रहे थे तो चांदी के सिक्कों की खान दृष्टिगोचर हुई। पहले तो लोग ताम्र सिक्कों की अवहेलना कर चले आए थे, उनसे अब न रहा गया और वे मुद्राओं को संग्रह करने लग गए। इस पर नारद मुनि ने फिर समझाया तो उसमें से कुछ तो बटोरने में ही लगे रह गए और शेष हृदय को दृढ़ कर मुनि के साथ चल दिए। उन्होंने सोचा कि यह साधु चमत्कारी मालूम होता है, इसलिए देखना चाहिए आगे

शेष पेज 27 पर...

राठौड़ राजवंश पर गुरु जांभोजी का प्रभाव

गुरु जांभोजी मरूधरा के मध्ययुगीन महान सिद्ध पुरुष, देव पुरुष, महान समाज सुधारक, पर्यावरणविद् व विष्णु के अवतार थे, जिनका अवतरण नागौर जिले के पींपासर गांव में भादवा बदी अष्टमी संवत् 1508 (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी) के दिन हुआ था। भारतीय वाङ्मय की पावन श्रीकृष्ण वाणी श्रीमद्भगवद् गीता में बताया गया है कि साधु संतों की रक्षा करने पापियों का नाश करने एवं धर्म की स्थापना करने के लिए भगवान युग-युग में प्रकट होते हैं-

परित्राणाय साधूनाम् विनाशय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थानापनार्थाय सम्भवामी युगे युगे॥ (गीता 4:8)

गुरु जांभोजी ने अपने दिव्य व अलौकिक व्यक्तित्व व कृतित्व, अपनी वाणी तथा चमत्कारिक कार्यों से तात्कालीन समाज को अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने परोपकार, दया, क्षमा, ईमानदारी, सहिष्णुता, सादगी, कार्यशीलता आदि मानवीय मूल्यों की स्थापना की व जातिगत भेदभाव को समाप्त किया। उन द्वारा स्थापित बिश्नोई समाज में सभी धर्मों, वर्णों व जातियों के लोग दीक्षित हुए थे। सामान्य जन के साथ साथ अनेक शासक राजा, महाराजा भी उनके शरणागत हुए व शिष्यत्व ग्रहण किया। जम्भसार कथाओं के अनुसार ईरान के बादशाह ने एक लाख पट्टे की जागीरी का परवाना लिखकर जांभो जी के चरणों में रखा। दिल्ली का बादशाह सिकंदर लोदी, नागौर का शासक मुहम्मद खां, जैसलमेर का रावल जैतसिंह, उदयपुर का राणा सांगा गुरु जांभोजी के शरणागत हुए तथा ज्ञानोपदेश लिया।

गुरु जांभोजी के जीवनकाल (सम्वत् 1508-1593) में मारवाड़ के नरेश व जोधपुर के संस्थापक राठौड़ जोधा एवं उनके वंशजों को जांभोजी के आशीर्वाद व वरदान का सौभाग्य प्राप्त हुआ। राव जोधा के पुत्र राव शांतल, राव सुजा, राव बाघा, राव गांघा, राव मालदेव आदि जोधा के पास रहते थे। राव जोधा के दो पुत्र वरसिंह व राव दूदा को मेड़ता की जागीर प्रदान की थी। दोनों भाइयों ने मिलकर चैत बदी 6 संवत् 1518 को मेड़ता नगर के कोट की नींव लगाई तथा 360 गांवों को जीतकर मेड़ता शहर बसाया। कुछ समय बाद दोनों भाइयों में मतभेद होने से बड़े भाई वरसिंह ने राव दूदा को रायण की जागीर देकर पृथक कर दिया। असंतुष्ट राव दूदा अपने अग्रज राव बीका से मिलने जांगल प्रदेश (आधुनिक बीकानेर) के लिए रवाना हुआ। सन् 1462 (संवत् 1519) को रास्ते में पींपासर ग्राम में पाल चारण अवस्था में जांभोजी के चमत्कारों से अति प्रभावित हुआ तथा गुरु जांभो जी को सिद्ध पुरुष मानकर, प्रणाम करके अपना दु:ख बताया व मनोकामना पूर्ति हेतु प्रार्थना की। राव दूदा को गुरु जांभोजी ने कैर की लकड़ी दी व मेड़ता प्राप्ति का आशीर्वाद दिया तथा कहा कि जब तुम इस कैर की लकड़ी को काम में लोगे तो यह खांडा बन जाएगी। जांभोजी के कहे अनुसार दूदा को मार्ग में दो घुड़सवार बरसिंह द्वारा भेजे हुए मिले जो दूदा को बुलाने के लिए आए थे। मूंडवा के तालाब पर सोने से भरे हुए चरू प्राप्त हुए। मेड़ता पहुंचने पर बरसिंह ने दूदा का स्वागत किया व राज्य सौंपा।

इसका उल्लेख जांभाणी साहित्य के कवियों ने किया है। जांभोजी के समकालीन कवि उदो जी नैण कृत आरती में एक पंक्ति आती है-

(अ) दूसरी आरती पींपासर आये, दूदैजी ने प्रभु परचो दिखायो।
(ब) दूदो देसोटे गयो, मन में घणो अधीर
कूवे उपर निरख्यो, जुग तारण जंभ पीर॥
थलिये दूदो मिल्यो, तुठ्यो सारे काज
जब लग खांडो राखसी, तब लग निश्चल राज॥
-कवि हीरानन्द कृत हिन्डोळणों

(स) विष्णु भगत दूदो जी भयो, जांभे सर तब खांडो दियो।

– अज्ञात कवि

कवि सुरजन जी, मुकन जी, गोकल जी, हीरानन्द के हरजस में देसोटा तथा राज्य प्राप्ति के आशीर्वाद का वर्णन मिलता है। इन कवियों की रचनाओं के अतिरिक्त रिपोर्ट मरदुम शुमारी राज मारवाड़ 1891 ई. राजपूताना गजेटियर्स में भी इस घटना का विवरण मिलता है।

विक्रम संवत् 1526 (सन् 1469) के लगभग राव जोधा की गुरु जांभो जी से भेंट हुई व आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरु जांभोजी ने राव जोधा को बैरीशाल नगाड़े भेंट किए तथा कहा कि युद्ध के समय इन नगाड़ों की आवाज सुनकर शत्रु शक्तिहीन हो जाएगा। ये बैरीशाल नगाड़े वर्तमान में बीकानेर के जूनागढ़ किले में दर्शनार्थ रखे हुए हैं।

रामसल बरसल सिसोदिया नै दूदा सांतल राव।
बीको बीदो हमीर बाघो जोध दवा इस जाव॥

राव बीका चांडासर तथा बीकानेर से कई बार जांभोजी के दर्शन करने एवं आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए गुरु जांभो जी के पास गया था। राव बीका ने राव जोधा के स्वर्गवास के बाद 14 राज्य चिह्न मांगे जिनमें बैरीशाल नगाड़ा भी साथ था। जब उनको मांगने पर यह वस्तुएं नहीं मिली तो राव बीका ने चढ़ाई करके जोधपुर में राव सुजा की माता जसमा से बैरीशाल नगाड़े सहित अन्य वस्तुएं प्राप्त की।

राव लूणकरण गुरु जांभोजी के परम भक्त थे तथा उन्होंने गुरु जांभो जी के चमत्कारों से प्रभावित होकर गुरु जांभो जी की स्तुति लिखी तथा अपनी शंका निवारण के लिए पुरोहित को गुरु जांभो जी के पास भेजा।

द्रोणपुर छापर का राजा राव बीदा की प्रारंभ में गुरु जांभो जी के प्रति श्रद्धा नहीं थी तथा वह अहंकारी व्यक्ति था। उसने गुरु जांभो जी के शिष्य मोती मेघवाल को कैद कर लिया था तथा देवत्व प्रभावित करने के लिए कहा– जेतूं आपसति देवे कहावै, सो देवापण आज दिखावै। लेकिन गुरु जांभो जी के चमत्कार एवं प्रभाव के कारण शरणागत हुआ तथा गुरु जांभो जी ने नीम के नारियल, आक के आम, जल का दूध तथा एक समय में सैकड़ों स्थानों पर दर्शन देकर चमत्कार दिखाया तथा उसको शब्द वाणी के सबद नं. 3 ओ३म् मोरे आंगन अलसी.. तथा सबद नं. 67 शुक्ल हंस सुनाया।

राव जोधा के भाई कान्ह जी के पुत्र उधरण को भी गुरु जांभो जी ने सबद नं. 2 ओ३म् मोरे छाया ने माया व सबद 4 ओ३म् जद पवन न होता आदि सुनाकर उधरण की शंका का निवारण किया।

राव जोधा का वंशज राव मालदेव भी लोहावट वन में गुरु जांभो जी से मिला व आशीर्वाद प्राप्त किया। अनेक जांभाणी साहित्यकारों की रचनाओं से निम्न बिन्दुओं की पुष्टि होती है।

1. मेड़तिया राठौड़ अपने विवाह रीति रिवाजों में गुरु जाम्भोजी का एक भगवां प्रतीक रखता है। पगड़ी के एक सिरे का तिकोना कोन अथवा गंठजोड़े वाले कपड़े के एक कोने को उसी रूप में भगवां रंगाकर धारण करते हैं।
2. अपने ठिकानों की सीमा में न तो हिरण का शिकार करते हैं और ना ही शिकार करने देते हैं। अत: गुरु जाम्भो जी के उपदेश के अनुरूप जीव हत्या निषेध का पालन करते हैं।
3. बिश्नोइयों को अपना गुरु भाई मानते हैं।

इस प्रकार राठौड़ नरेशों पर गुरु जी की अनुकंपा रही और राठौड़ वंश पर गुरु जांभो जी का प्रभाव रहा।

– ओमप्रकाश बिश्नोई
शोधार्थी, बीकानेर विश्वविद्यालय,
रा. सार्दुल स्कूल, बीकानेर

'पर्यावरण बचाओ' एक निवेदन

'जल है तो जन है, वन है तो जल' जी हां जल के बिना जिस प्रकार मानव जीवन संभव नहीं उसी प्रकार वन के बिना जल (वर्षा) संभव नहीं। विकासशील देशों में विकसित होने की राह पर चलते हुए जिस प्रकार पर्यावरण से अनदेखी की है उसका परिणाम निश्चित तौर पर मानव को चुकाना पड़ रहा है और पड़ेगा ही।

स्वच्छ पर्यावरण ही स्वच्छ एवं प्रगतिशील राष्ट्र की आधारशिला है, इसके लिए अधिक से अधिक जानकारी एवं सहयोग की आवश्यकता है जिस प्रकार वैश्विक स्तर पर वातावरण में परिवर्तन हो रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, नदियों के उद्‌गम स्थलों पर जल प्रभावित हो रहा है, पेड़ों की सम्पदा दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। ओजोन परत साल दर साल महीन (बारीक) होती जा रही है। उपर्युक्त सभी को ध्यान में रखते हुए यह कहना चाहूंगा कि वह दिन दूर नहीं जब सृष्टि का स्वरूप ही बदल जाएगा।

पेड़ों की संख्या भी उसी प्रकार बढ़े जिस प्रकार हमारी जनसंख्या एवं औद्योगिक विकास दर बढ़े। नए शहर, नई कालोनियों के बसने के कारण खेती लायक जमीन कम हो रही है जिससे वरन पर्यावरण को भी हानि हो रही है। इसके लिए सरकार एवं निजी क्षेत्र की भागीदारी से समुचित जनचेतना की आवश्यकता है। 'Multicity' बहुउद्देशीय शहरों बिल्डिंगों का निर्माण 'पर्यावरण' को ध्यान में रखकर करना चाहिए न कि अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए। याद अवश्य रखें कि 'सृष्टि बचेगी तो ही मानव जीवन बचेगा'।

पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुदृढ़ बनाने के लिए सरकार से भी विशेष कानून बनाने का निवेदन करना चाहूंगा। जिस प्रकार स्कूल/कालेजों में बालकों/बालिकाओं को N.C.C. (National Cadet Core), N.S.S. (National Service Scheme) के साथ जोड़कर कैंप एवं ट्रेनिंग के दौरान इनका महत्त्व एवं संपूर्ण जानकारी दी जाती है ताकि बालक/बालिकाओं के मन में राष्ट्र के प्रति सेवा भावना जगाई जा सके और उनको राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित किया जा सके। भविष्य में यदि वह बालक सरकारी नौकरी के लिए आवेदन में N.C.C./N.S.S. का प्रमाण पत्र संलग्न करता है तो उसको अन्य आवेदकों के मुकाबले प्राथमिकता दी जाती है।

भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय से अनुरोध करना चाहूंगा कि ऐसी ही व्यवस्था पर्यावरण के लिए भी की जाए ताकि बालक/बालिकाओं एवं समूचे राष्ट्र में एक लहर के तौर पर कार्य हो। उदाहरण- यदि कोई बालक/बालिका पांचवीं कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक 500 पेड़-पौधे लगाता है, उनकी देखभाल करता है तो उसको पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रमाण पत्र दिया जाए और साथ ही भविष्य के लिए आवेदन की गई नौकरी/इंटरव्यू के लिए भी 2 प्रतिशत अंकों का महत्व अतिरिक्त दिया जाए। सरकार एवं सांसदों से अनुरोध है कि 'जब सांसदों को अपना वेतन एवं अन्य बिल (निजी लाभ) पास करने हों तो साधारण बहस के साथ ध्वनिमत से ही लोकसभा एवं राज्यसभा से पारित कर दिए जाते हैं।

आप सभी से हार्दिक अनुरोध है जिस प्रकार वित्त मंत्रालय, भारत सरकार लम्बे समय के लिए के. वी.पी./एन.एस.सी./आई.वी.पी. या बॉण्ड इत्यादि चलाता है। उसी प्रकार पर्यावरण मंत्रालय भी हरियाली एवं पर्यावरण से संबन्धित इस प्रकार की पहल करें ताकि जन-जन अधिक जागरूक हो जाए। एक व्यापक जन चेतना की आवश्यकता है जो कि कश्मीर से कन्याकुमारी एवं कोहिमा से कच्छ तक कामगर हो। राज्य सरकारों से अनुरोध है कि प्रत्येक जिलों में जितनी भी दुकानें एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठान या फैक्टरी आती है उनको पेड़ों को लगाने, पालने हेतु प्रेरित करे और

उनको सेल्स टैक्स, बिजली बिल, मकान टैक्स यहां तक कि इनकम टैक्स (आयकर) में भी कुछ एक प्रतिशत की छूट दी जावे ताकि इस पुण्य कार्य हेतु सबको प्रेरित किया जा सके। यह सर्वविदित है कि आज तक सृष्टि में बगैर जनभागीदारी के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हुआ है सरकार को इसके लिए पहल की जानी चाहिए। हमारे प्रिय पर्यावरणविद जो कि पंजाब नेशनल बैंक हिसार मुख्य शाखा में वरिष्ठ प्रबंधक श्री प्रेम चौधरी जी बताते हैं उनकी संस्था 'चौमासा वृक्षारोपण रेजीमेंट' बारिश के दिनों में कार्य करती है। चौधरी जी का मानना है कि हर एक व्यक्ति/घर को चार पेड़ों को गोद लेना चाहिए। फिर ताउम्र उनकी ऐसे सेवा करे जैसे माता-पिता बच्चों की करते हैं। तभी पर्यावरण, हरियाली से हरा-भरा एवं प्रदूषण से मुक्त एवं एक विकसित, समृद्ध, शक्तिशाली राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। आपका सहयोग 'हरित सृष्टि' हेतु आवश्यक है।

- दिनेश बिश्नोई

मुख्य कार्यकारी अधिकारी, हरित सृष्टि
110, हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, सिरसा रोड, हिसार

...पेज 23 का शेष

क्या होता है?

तीसरा कोस पार करते ही स्वर्ण मुद्राओं का ढेर मिला। अब तो मन को वश में रखना बहुत ही कठिन था। ताम्र मुद्रा छोड़ दिया, लेकिन स्वर्ण मुद्रा का लोभ कैसे छोड़ा जाय। नारद मुनि ने अनेक वाक्यों से समझाया लेकिन उनमें से इने-गिने लोग ही यानी 10-20 की संख्या में मुनि के साथ आगे चलने के लिए तैयार रहे। अब नारद मुनि को योगमाया पर बड़ा क्रोध आया और मन ही मन भगवान पर भी बिगड़ने लगे। भगवान की प्रेरित इस योग माया ने ही सब सत्यानाश किया है, वहां तो हमने भगवान से कहा था कि हजारों की संख्या में भक्त लोग आएंगे। कहां यह 10-20 आदमी रहे हैं। खैर, इतने ही सही कुछ तो बात रह ही जाएगी।

इसी सोच विचार में नारद मुनि चौथे कोस को पार कर ही रहे थे कि हीरा-जवाहरातों का ढेर मिल गया। अब तो 10-20 बचे थे उसमे दो-तीन ही बाकी रहे, जो कि सच्चे हृदय से भगवान को चाहते थे, बाकी सब जवाहरातों को संचित करने में लग गए। इस तरह सिर्फ दो-तीन व्यक्ति को लेकर नारद मुनि वट वृक्ष के नीचे भगवान के समीप पहुचे। भगवान मंद-मंद हँस रहे थे। इससे नारद मुनि भगवान पर कुछ नाराज होकर कहने लगे कि यदि आपकी योगमाया ने अपना जाल बिछाकर यह अनर्थ न किया होता तो, आज सब के सब भक्त आपके दर्शन करने में समर्थ होते।

तब भगवान ने नारद मुनि से कहा- 'हे नारद! इतने मनुष्यों में कोई ही पुरुष मुझे सात्विक रूप से जानता है एवं उनमें से कोई बिरला ही मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता हैं जो मेरी ही शरण होकर मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है, उनको में दर्शन अवश्य देता हूँ, इसमें संशय नहीं है। इतना सुनकर नारद मुनि का भ्रम दूर हुआ और अपने अपराध की क्षमा माँगते हुए भगवान का गुणगान करने लगे ।

इस प्रसंग में इस बात का व्यख्यान करना आवश्यक होगा कि बिश्नोई सम्प्रदाय के जन मानस में भी ईश्वर के प्रति आस्था पहले से ही ज्यादा प्रबल हो चली है। पिछले एक दशक से हर माह आने वाली अमावस्या को लोगों का 'जन समूह' मुकाम व अन्य धामों की यात्रा करते हैं तथा गुरु जम्भेश्वर भगवान के सामने नत मस्तक होते है। यह बहुत अच्छी बात है कि समाज के लोगों की उनके प्रति उपासना, अतीत से ज्यादा देखी जा सकती है और ऐसा होना भी चाहिए, परन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि क्या हम किसी स्वार्थ की पूर्ति के लिए यह सब करते है या फिर सच्चे भाव से गुरु के प्रति समर्पित होकर ईश्वर को पाने की अभिलाषा रखते है। इस प्रश्न का उत्तर आज के भौतिकवादी युग में हमारे लिए ढूढ़ना कठिन है, लेकिन फिर भी अगर हम प्रयास करें तो यह सम्भव हो सकता है।

रामकिशन बिश्नोई, चण्डीगढ़

हलचल

अगहन उत्सव मिंगसर अमावस्या मेला नीमगांव

24 नवंबर को प्रात: 8 बजे श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के मंदिर के पवित्र प्रांगण में हवन शुरू हुआ। जिसमें आचार्य डा. गोवर्धन राम जी शिक्षा शास्त्री जी ने गोत्राचार प्रारम्भ करके 120 शब्दों का हवन किया। नीमगांव व अन्य स्थानीय श्रद्धालुओं ने हवन में आहुतियां डाली। फिर स्वामी शिव ज्योतिषानन्द जी ने पाहल बनाया। उसके बाद बच्चों की भाषण प्रतियोगिता हुई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रामस्वरूप जी सिहाग, फतेहाबाद थे। सभी बच्चे बारी-बारी ने अपना उद्‌बोधन दिया जिसमें प्रथम स्थान जागृति बिश्नोई ने प्राप्त किया। उसके बाद श्री रामस्वरूप जी सिहाग ने सभी बच्चों की इस अच्छे कार्यक्रम के लिए आभार व्यक्त किया और हौसला बढ़ाया। इसी कार्यक्रम के साथ-साथ 3 बजे जम्भवाणी कथा प्रारम्भ हुई। कथा वाचक स्वामी गोवर्धन जी ने अपनी वाणी में नियमों व सबदवाणी का अर्थ किया। साथ में भजन व कीर्तन करके सभी को मंत्र मुग्ध किया तथा गाय के महत्व के बारे में बतलाया। शास्त्रों में गाय को चलता-फिरता मंदिर बतलाया है। पाहल की मर्यादा के बारे में भी बताया। अंत में स्वामी जी ने सभी को प्रसाद वितरण किया। उसी दिन शाम को आरती के बाद शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया। रात्रि में जागरण किया गया। 25 नवंबर को प्रात: 8 बजे मंदिर के प्रांगण में हवन शुरू किया। बड़ी श्रद्धा के साथ हवन में आहुति डाली गई और साथ-साथ अमर ज्योति सदस्य बनने का कार्यक्रम जारी रहा। श्री राधेश्याम जी गोदारा व श्री किशन जी खिलेरी महासभा सदस्य ने पूरा सहयोग किया। नीमगांव धाम का अत्यधिक महत्त्व है यहां के लोग व अपने-अपने बच्चों के वजन के बराबर फल, मिठाई बांटते हैं। उनका मानना है कि गुरु महाराज की कृपा से बच्चा स्वस्थ रहता है। यह यहां की परम्परा है। हवन के बाद पंच पंचायती का कार्यक्रम शुरू हुआ। स्वामी जी ने 6 व्यक्तियों को बुलाकर हवन में आहुति डलवाई और संकल्प दिलवाया हम हमारे क्षेत्र में नियमों का पालन करवाएंगे और समाज में फैली कुरीतियों का अंत करवाएंगे। उसके बाद सभी ने पाहल ग्रहण किया। मुख्य कार्यक्रम 11 बजे शुरू हुआ। सभी भक्तों व दूर दराज से आए मेहमानों का माल्यार्पण करके स्वागत किया। जिसमें मंच पर स्वामी डा. गोवर्धनराम आचार्य जी व संतगण विराजमान हुए व अन्य समाज के गणमान्य व्यक्ति जिसमें जयशंकर बिश्नोई, श्री लक्ष्मीनारायण जी पंवार जिला अध्यक्ष, रामकुमार जी खोड़ फतेहाबाद, किशन जी खिलेरी, भूराराम जी खोड़, डा. आर.एन. सारण, युवा बिश्नोई अध्यक्ष लोकेश पंवार उपस्थित थे। सभी ने अपने संबोधन में समाज के विस्तार के बारे में अवगत कराया। धर्म नियमों पर चलने की बात कही। नीमगांव का मंदिर पूरे भारतवर्ष में जाना जाता है। यहां समाज के लोग सफेद पजामा कुर्ता, बुजुर्ग धोती कुर्ते में दिखाई देते हैं जिससे देखने में सच्चे बिश्नोई दिखते हैं। यहां के लोग सभी साधन सम्पन्न हैं। समाज के कार्य में भाग लेने और इस कार्यक्रम में जो तन-मन-धन से सहयोग किया उनका धन्यवाद किया।

- **इन्द्रजीत धारणियां,** सचिव,
बिश्नोई सभा डबवाली

श्री जम्भेश्वर मन्दिर मोरिया मुंजासर में मिंगसर अमावस्या मेला सम्पन्न

मिंगसर अमावस्या 25 नवम्बर को श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर, मोरिया में वार्षिक मेला हर्षोल्लास से

सम्पन्न हुआ। मेले के पूर्व 18 नवम्बर से मन्दिर प्रांगण में संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ प्रारम्भ हुई। परम पूज्य स्वामी भागीरथदास जी आचार्य (जाजीवाल धोरा) के सान्निध्य में एवं कथा वाचक स्वामी शिवज्योतिषानन्द जी महाराज की गौरवपूर्ण उपस्थिति में बिश्नोई रत्न चौधरी भजनलालजी पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर स्वामी भागीरथदास जी ने उनके कार्यों का स्मरण करते हुए समाज के लिए उनके द्वारा किए गये योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मिंगसर अमावस्या के मेले की पूर्व संध्या एवं भागवत कथा समाप्ति पर 24 नवम्बर को रात्रि में विशाल जागरण का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी बालुदास जी महाराज एवं गायक कलाकार मांगीलाल थोरी ने अपनी मधुर वाणी में आरती, साखी व भजन सुनाए। अमावसया को प्रात: विशाल यज्ञ, हवन, पाहल श्री महन्त भजनदास जी के सान्निध्य में हुआ। दिन में लगभग 12 बजे धर्मसभा का आयोजन महन्त श्री भगवानदास जी जाम्बा, परम पूज्य संत श्री शिवज्योतिषानन्द जी (अजमेर), स्वामी भजनदास जी जाम्भा के सान्निध्य में धर्मसभा का आयोजन हुआ। इन महात्माओं ने मन्दिर परिसर में 5100 वृक्ष लगाने एवं गौशाला निर्माण का प्रस्ताव रखा जिसका समाज व भक्तजनों ने करतल ध्वनि से स्वागत करते हुए सर्व सम्मति से पारित कर पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। गौशाला हेतु भक्तों व संतों ने लगभग 5 लाख का सहयोग तुरंत दे दिया।

धर्म सभा में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए भाजपा प्रदेश मंत्री मास्टर पब्बाराम जी ढाका ने धर्म एवं कर्म की महत्ता प्रतिपादित करते हुए सामाजिक एकजुटता की बात कही। आपने गौशाला प्रस्ताव को प्राणी मात्र के हित का कार्य बतलाया तथा सभी से तन-मन-धन से सहयोग देने की अपील की। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता मृगेन्द्रसिंह जी भाटी ने गौशाला एवं वृक्षारोपण में पूर्ण सहयोग देने का वादा किया एवं इस पुनीत कार्य को मानव के कल्याण का मार्ग बताया। अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय महासचिव व वरिष्ठ पत्रकार मांगीलाल बूड़ीया ने पर्यावरण एवं जीवरक्षा के कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए 29 नियमों की पालना करने तथा सुसंस्कारित समाज निर्माण की अपील की। जिला परिषद् सदस्य एवं बिश्नोई नवयुवक मंडल ओसियां के अध्यक्ष भागीरथ बैनिवाल ने नशावृत्ति त्यागने एवं आत्मशुद्धि पर बल दिया।

पर्यावरण प्रेमी खम्मुराम खीचड़ ने कहा कि व्यक्ति के इच्छाशक्ति के फलस्वरूप कोई कार्य कठिन नहीं है। नगरपालिका फलौदी पार्षद श्रीमती सरस्वती बिश्नोई ने महिला शिक्षा पर बल दिया तथा कहा कि लड़की पढ़ी लिखी होगी तो वह मायका व ससुराल दो परिवारों के बच्चों को शिक्षित करेगी। इसलिए सभी अपनी लड़कियों को जरूर पढ़ावें। श्री हरदास जी काकड़ भीमसागर ने आध्यात्मिक बातें बतलाते हुए धर्म पर चलने की अपील की।

आगामी 15 दिसम्बर को प्रस्तावित गौशाला का शिलान्यास करने का निर्णय लिया गया तथा 5100 वृक्ष लगाने के लिए खेजड़ली शहीदी दिवस भादवा सुदी दशमी मंगलवार 25 सितम्बर 2012 निश्चित किया गया। संस्थान के सेवकदल के रूप में रामरख मांजू, छोगाराम थोरी, लक्ष्मणराम मांजू, माणकराम बरड़ आदि सभी सेवकों ने सराहनीय सेवा प्रदान कर मेला एवं कथा कार्यक्रम को सफल बनाया। मंच संचालन मास्टर प्रकाशचंद मांजू रणीसर ने किया। शिव सनातन गौशाला का उद्घाटन 15 दिसम्बर 2011 को महन्त भगवानदास जी जाम्बा के कर कमलों द्वारा किया गया। प्रेरणा स्त्रोत स्वामी शिवज्योतिषानन्द महाराज एवं पधारे हुए संतगण व गौभक्त लोगों ने अपनी पुण्य कमाई का गौसेवा के लिए दान दिया।

कुलदीप जी बिश्नोई एवं रेणुका जी बिश्नोई के विजयी होने पर श्रीगुरु जम्भेश्वर धर्मार्थ संस्थान मोरिया मुंजासर के अध्यक्ष हजारीराम मांजू एवं समस्त ग्रामवासियों की तरफ से हार्दिक बधाई।

अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा की बैठक सम्पन्न

29 नवम्बर को प्रात: 11 बजे पब्लिक पार्क स्थित बिश्नोई धर्मशाला, बीकानेर में अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा की एक बैठक रखी गई है। जिसकी अध्यक्षता राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष शिवराज बिश्नोई ने की। बैठक में प्रदेश की व जिलों की कार्यकारिणी के बारे में विचार विमर्श किया गया जिसमें सर्वसम्मति से निम्न नामों की नियुक्ति व घोषणा की गई। इस घोषणा में सभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री साहब राम बिश्नोई एवं राजस्थान के सचिव राम निवास बिश्नोई ने अनुसंशा की। इस बैठक में श्री अमित कुमार जांगिड़, बीकानेर राज. प्रदेश उपाध्यक्ष, श्री अशोक कुमार सीकर, राज. प्रदेश सचिव (योजना), श्री अरविन्द कुमार ईसरवाल, राज. प्रदेश सचिव (जनसम्पर्क), श्री बद्री प्रसाद पंवार (रावला), राज. प्रदेश कोषाध्यक्ष, श्री राजेन्द्र बिश्नोई (जयपुर), राज. प्रदेश मीडिया प्रभारी, श्री पवन कुमार ज्याणी (गंगानगर), श्री सत्यनारायण सोडा (फलौदी), श्री सांवरलाल बिश्नोई (आर.टी.आई. प्रभारी), सहीराम जाखड़ (आर.टी.आई. प्रभारी) व शिवकरण जी की राज. प्रदेश कार्यसमिति सदस्य के पद पर नियुक्तियां की गई। श्री इमीलाल नैण (कोलायत) को बीकानेर का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि उपर्युक्त नियुक्तियां आगामी आदेशों तक प्रभावी रहेंगी।

– **शिवराज बिश्नोई**, प्रदेशाध्यक्ष राज.

शहीद बीरबल खिचड़ स्मृति मेला आयोजित

लोहावट कस्बे के समीप लोहावट जम्भेश्वर साथरी प्रांगण मे अमर शहीद बीरबल खिचड़ स्मृति मेले का 17.12.2011 को आयोजन किया गया। जिसमें 16.12.2011 को स्वामी श्री भागीरथदास शास्त्री जी, श्री महन्त भजनदास जाम्बा एवं अन्य संतगण ने मीठे-मीठे भजन एवं साखी का गायन किया एवं सुबह हवन एवं पाहल का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर स्वामी श्री भागीरथदास शास्त्री जी ने श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा बताया गया 'जीवदया पालणी' नियम पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् आयोजित पर्यावरण सम्मेलन में समाज के गणमान्य समारोह को संबोधित करते हुए स्वामी जी ने आशीर्वचन व शहीदों की महत्ता पर प्रकाश डाला। इसके बाद अखिल भारतीय जीवरक्षा बिश्नोई महासभा के संरक्षक हनुमान ज्याणी ने संबोधित करते हुए भगवान श्री गुरु जम्भेश्वर द्वारा पर्यावरण के सम्बन्ध में दिए गए उनके सिद्धान्त पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश कुमार राहड़ ने कहा- अ.भ.बि. जीव रक्षा सभा एवं श्री गुरु जम्भेश्वर बणीधाम वन्यप्राणी एवं वृक्षों के लिए शहीद हुए शहीदों की स्मृति में सभी जगह मेलों का आयोजन करेंगे। उन्होंने सभा के आगामी कार्य योजनाओं के बारे में बताया। सभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री साहबराम रोज ने बताया कि सभा विभिन्न प्रकार की जनचेतनाएं यात्रा निकालकर वन्यजीवों एवं वृक्षों के लिए शहीद हुए शहीदों की गाथा जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष शिवराज जाखड़ ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि शहीद धर्म या जाति का नहीं होता। वह तो सम्पूर्ण जगत के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सर्वहिताय के सिद्धान्त की पालना करता है। पब्बाराम ढाका ने अपने सम्बोधन में कहा कि शहीद बीरबल स्मृति मेले का आयोजन आगामी समय में और अधिक प्रचार-प्रसार की जरूरत है जिसके लिए समाज के सभी लोगों को आगे आना होगा। इस अवसर पर कामरेड रामेश्वर डेलू (बडोपल), सरपंच केशराराम मालाराम एवं खम्मुरामजी ने भी सम्बोधित किया। राजस्थान प्रदेश सचिव रामनिवास पूनियां उपाध्यक्ष, अमित जांगिड़, सचिव अशोक खररा, शिवकरण भादु, भाखरराम खिचड़, विजयपाल डेलू, राकेश खिचड़ आदि लोग उपस्थित थे।

–**रामनिवास पूनियां,** प्रदेश सचिव
अ.भा.बि. जीव रक्षा सभा

पंचकूला में यज्ञशाला का शिलान्यास

पंचकूला के हृदयस्थल सैक्टर 15 में गुरु जम्भेश्वर भगवान का भव्य मंदिर व बिश्नोई धर्मशाला धार्मिक आस्था एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक हैं। मन्दिर परिसर में एक खुली यज्ञशाला की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी के परिणामस्वरूप 10 दिसम्बर, 2011 को यज्ञशाला का शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ है। 10 दिसम्बर को प्रात: पूज्य स्वामी राजेन्द्रानंद जी (हरिद्वार) ने 120 सबदों का पाठ कर यज्ञ किया व पाहल बनाया, जिसमें सभी स्थानीय बिश्नोई बंधुओं ने भाग लिया। तत्पश्चात् स्वामी राजेन्द्रानंद जी ने सभा प्रधान श्री अचिन्तराम जी गोदारा के साथ यज्ञशाला की नींव रखी। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ बिश्नोई धर्म की पहचान है। यज्ञ एक उत्तम व धार्मिक होने के साथ-साथ एक देवता है इसलिए गुरु जांभो जी ने इसे 29 धर्म नियमों में स्थान दिया था। हरियाणा के पूर्व उपमुख्यमंत्री चौ. चन्द्रमोहन ने भी हवन में सम्मिलित होकर आहुति डाली।

घायल नीलगायों की जान बचाई

18 दिसम्बर, 2011 को रात्रि में हरियाणा के फतेहाबाद जिले में बीघड़ ढाण्ड रोड पर किसी वाहन ने एक नीलगाय को टक्कर मार दी, जिससे उनकी टांग टूट गयी। प्रात: होने पर जब इसकी सूचना चबलामोरी निवासी मनोज गोदारा, कृष्ण लेगा, रामचन्द्र लेगा, आत्माराम ज्याणी, शिव लेगा व सुरेन्द्र सहारण (काजलां) को मिली तो घायल नीलगाय को उठाकर कृष्ण लेगा के घर ले गये तथा पशु चिकित्सक को बुलाकर उसका उपचार करवाया। श्री मनोज गोदारा ने इसकी सूचना फतेहाबाद के वन्य जीवरक्षा अधिकारी, अमर ज्योति कार्यालय व जीव रक्षा सभा, हिसार के प्रधान कामरेड बनवारी लाल को दी। 19 दिसम्बर की रात को ही बीघड़ की रोही में एक नीलगाय को शिकारी कुत्तों ने काटकर घायल कर दिया। उपर्युक्त सभी महानुभावों ने गुरु जांभो जी के सच्चे शिष्य होने का परिचय देते हुए न केवल दोनों नीलगायों के प्राणों की रक्षा की अपितु उन्हें 20 दिसम्बर को लाला लाजपतराय पशु विश्वविद्यालय, हिसार के अस्पताल में पहुंचाया जहां उनका उपचार चल रहा है। ऐसी जीव प्रेमी गुरु जांभोजी के अनुयायी धन्यवाद के पात्र हैं तथा हम सबके लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

भिरडाना में विशाल जागरण एवं मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह

17 अक्तूबर को श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर, भिरड़ाना के प्रांगण में विशाल जागरण का आयोजन किया गया, जिसमें जाजीवाल धोरा, जोधपुर से स्वामी श्री भागीरथ दास जी आचार्य व उनके साथ स्वामी सुखदेव जी मुनि एवं स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने भगवद् महिमा का गुणगान किया। स्वामी भागीरथ जी आचार्य ने उपस्थित लोगों से नशा त्यागने का आह्वान किया और 29 धर्म नियमों पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने बुरे विचारों को मन में न लाकर अच्छे विचारों को लाने पर बल दिया। जागरण में श्री सुखदेव जी मुनि एवं सन्त राजेन्द्रानन्द उर्फ 'राजू जी' ने आरती, साखियों एवं भजनों से लोगों को भावविभोर कर दिया। इस पावन जागरण में गांववासियों के अलावा झलनियां, ढाणी माजरा, खजूरी जाटी एवं मोहम्मदपुर रोही से अनेक बिश्नोई बन्धु पधारे हुए थे। अगले दिन 18 अक्तूबर को प्रात:काल 9 बजे हवन प्रारम्भ हुआ। आए हुए बिश्नोई बन्धुओं ने पाहल ग्रहण किया। तत्पश्चात् मन्दिर में गुरु महाराज की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की। स्वामी भागीरथ

दास जी आचार्य ने अखण्ड ज्योति दीप प्रज्ज्वलित किया। इस अवसर पर बिश्नोई सभा के पदाधिकारियों के अलावा श्री रामस्वरूप जी बैनिवाल, प्रधान बिश्नोई सभा रतिया, श्री रामेश्वर जी लाम्बा डी.एस.पी., श्री गिरधारी जी बैनिवाल, रामस्वरूप बैनिवाल ढाणी माजरा, श्री नेकीराम जी गोदारा झलनियां, भूपसिंह जी ढाका, रामेश्वर जी ढाका खजूरी जाटी, हरिसिंह जी गोदारा, ओमप्रकाश जी सिगड़, ना ढोडी उपस्थित थे। तत्पश्चात् संतगणों, आए हुए मेहमानों एवं ग्रामवासियों को प्रसाद दिया गया। अंत में ग्रामवासियों एवं सभा के पदाधिकारियों ने आए हुए संतजनों एवं अतिथियों का धन्यवाद किया।

समस्त ग्रामवासी, भिरड़ाना (फतेहाबाद)

कामरेड रामेश्वर डेलू जीव रक्षा सभा के प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त

अखिल भारतीय बिश्नोई जीव रक्षा सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश राड़ ने सभा को विस्तार देते हुए प्रसिद्ध समाजसेवी कामरेड रामेश्वर डेलू निवासी गांव बडोपल, जिला फतेहाबाद को हरियाणा प्रदेश का प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त किया। वर्तमान में वन्य जीवों के प्रति बढ़ती हिंसा को रोकने में सभा और अधिक सक्रियता से कार्य करेगी। आशा है कि कामरेड रामेश्वर डेलू की इस नियुक्ति से जीव रक्षा सभा के संगठन को मजबूती मिलेगी और श्री डेलू जी और अधिक सक्रियता व समर्पण से अपना कार्य करेंगे।

शोक संदेश

श्री शंकरलाल भाम्भू पुत्र श्री रतिराम जी भाम्भू निवासी गांव आदमपुर का स्वर्गवास 97 वर्ष की आयु में 19 नवम्बर 2011 को हो गया है। वे गुरु जम्भेश्वर के परम अनुयायी व समाज सेवी व्यक्ति थे। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे व परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री मोहनलाल जी जाणी निवासी 89, डिफैंस कालोनी, हिसार का 29 नवम्बर 2011 को अल्प आयु में आकस्मिक निधन हो गया है। वे महिला एवं बाल विकास विभाग, हरियाणा के कैथल शहर में कार्यरत थे। वे बड़े ही मिलनसार, शांत स्वभाव, हंसमुख एवं धर्म प्रेमी थे। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे व परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति व धैर्य प्रदान करे।

श्री रामानन्द जी देहडू निवासी सिवानी का 12 नवम्बर, 2011 को स्वर्गवास हो गया है। वे 1983 में सिवानी से पंचायत सदस्य बने तथा 1983 में ही बी.डी.सी. के सदस्य बने। वे बड़े ही मिलनसार, हंसमुख एवं धर्म प्रेमी थे। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे व परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति व धैर्य प्रदान करे।

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2068 माघ की अमावस्या

लगेगी : 22.01.2012
रविवार, दोपहर 2 बजकर 19 मिनट पर

उतरेगी : 23.01.2012
सोमवार, दोपहर 1 बजकर 8 मिनट पर

विक्रमी सम्वत् 2068 फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी : 20.02.2012
सोमवार, रात्रि 3 बजकर 50 मिनट पर

उतरेगी : 21.02.2012
मंगलवार, रात्रि 4 बजकर 04 मिनट पर

फाल्गुन अमावस्या मेला

मुकाम, सम्भराथल, पीपासर,
लोहावट, सोनड़ी, कांठ, मेघावा
21.02.2012 मंगलवार

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)
मो.: 09416407290

उन्नतीस धर्म नियम

- ★ तीस दिन सूतक रखना।
- ★ पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक रहना।
- ★ प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- ★ शील का पालन करना व संतोष रखना।
- ★ बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- ★ द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- ★ संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- ★ निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- ★ पानी, ईन्धन और दूध को छानबीन कर प्रयोग में लेना।
- ★ वाणी विचार कर बोलना।
- ★ क्षमा-दया धारण करना।
- ★ चोरी नहीं करनी।
- ★ निन्दा नहीं करनी।
- ★ झूठ नहीं बोलना।
- ★ वाद-विवाद का त्याग करना।
- ★ अमावस्या का व्रत रखना।
- ★ विष्णु का भजन करना।
- ★ जीव दया पालणी।
- ★ हरा वृक्ष नहीं काटना।
- ★ काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- ★ रसोई अपने हाथ से बनानी।
- ★ थाट अमर रखना।
- ★ बैल बधिया नहीं कराना।
- ★ अमल नहीं खाना।
- ★ तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- ★ भांग नहीं पीना।
- ★ मद्यपान नहीं करना।
- ★ मांस नहीं खाना।
- ★ नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

मुख्य अष्ट धाम

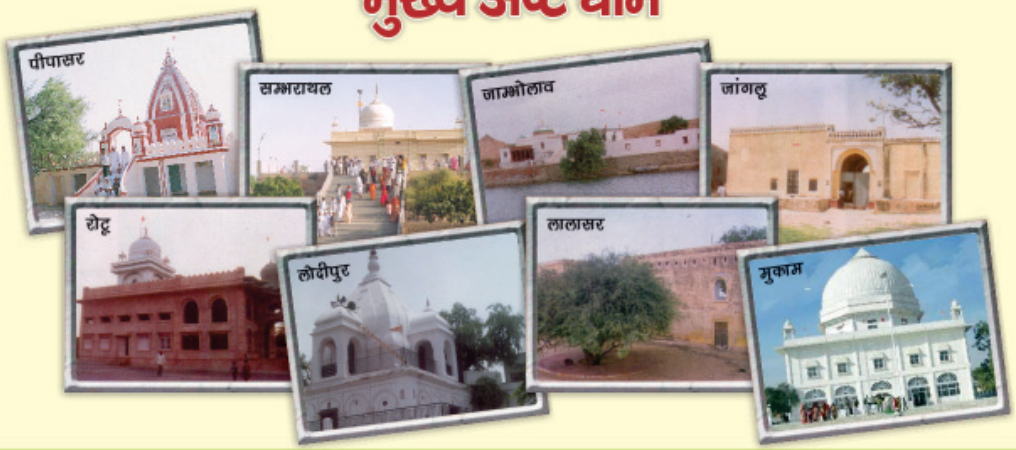

RNI No.: 12406/57

POSTAL REGD. NO.: L/Regd. NP/HSR/01/2011-2013
L/WPP/HSR/03/11-13

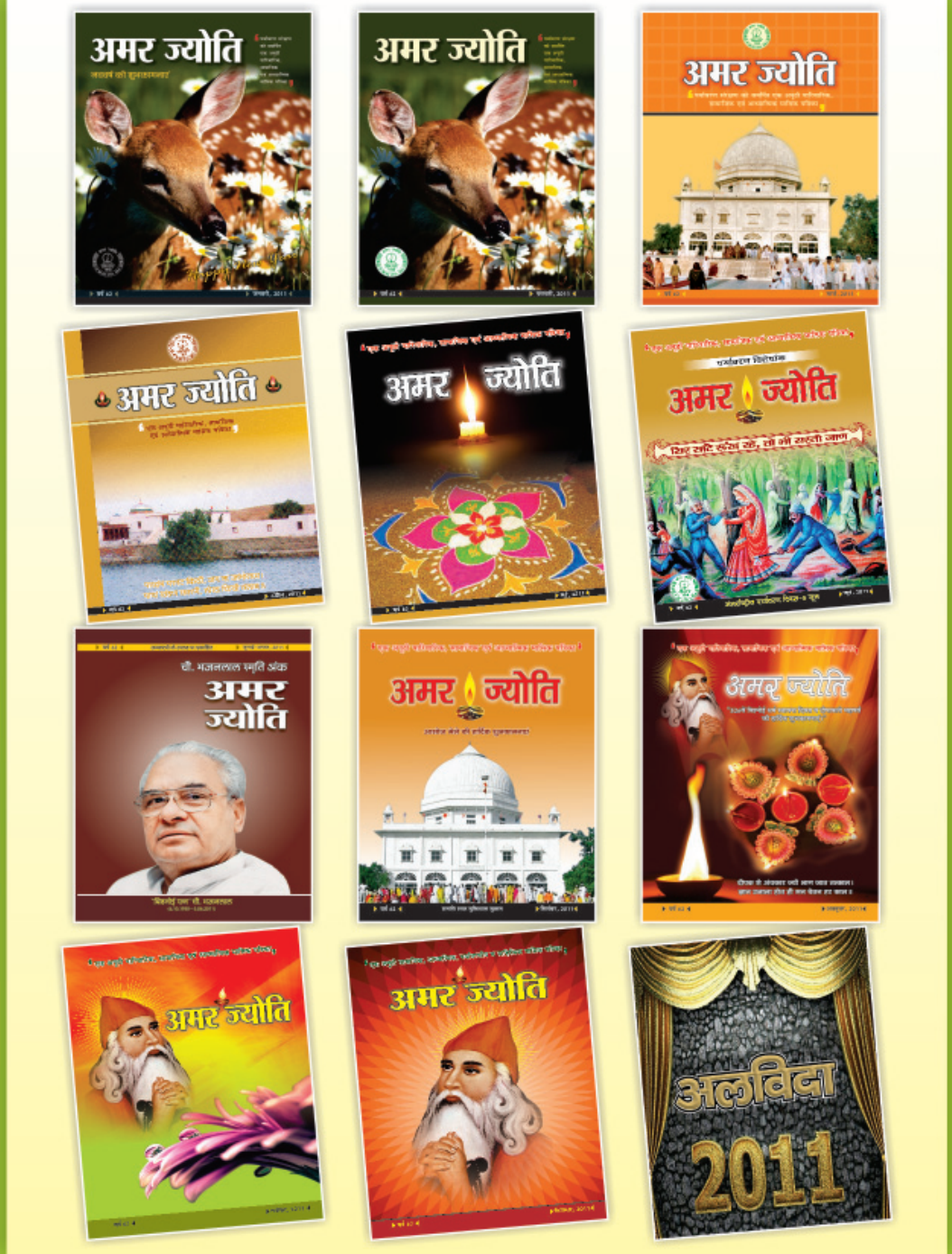

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जनवरी, 2012 को प्रकाशित किया।